UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026

शिशु मंदिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष -41 | अंक -..... | युगाब्द -5126 | विक्रम संवत् -2081 | जनवरी -2025

मूल्यः १२

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-31654408
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
फोन नं. : 9415212142
ईमेल : umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा **नूतन ऑफसेट, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ** उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्र।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

भाग्य भी परिश्रमी का साथ देता है

एक बार दो राज्यों के बीच युद्ध की तैयारियाँ चल रही थीं। दोनों राज्यों के शासक एक ही संत के भक्त थे। अपनी जीत। सुनिश्चित करने के लिये दोनों राजा संत जी का आशीर्वाद लेने उनके पास पहुँचे। पहले शासक को आशीर्वाद देते हुये संत बोले, 'तुम्हारी विजय निश्चित है।' दूसरे शासक से उन्होंने कहा, 'तुम्हारी विजय संदिग्ध है।' दूसरा शासक संत की बात सुनकर चला आया, किन्तु उसने अपने सेनापति से आकर कहा, 'हमें युद्ध की पूरी तैयारी करनी होगी। विजय के लिये अपने प्राणों की बाजी लगानी होगी।'

इधर पहला शासक अत्याधिक निश्चित था, उसकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था। उसने यह जानकर कि जीत उसी की होगी, अपना सारा समय आमोद–प्रमोद में लगा दिया। उसके सैनिक भी मौज उड़ाने में लग गये।

दोनों राजाओं में युद्ध आरम्भ हो गया। जिस शासक को विजय का आशीर्वाद था, उसे तो कोई चिंता ही न थी। उसके सैनिकों ने युद्ध का अभ्यास भी नहीं किया था। दूसरी ओर जिस शासक की विजय संत जी ने संदिग्ध बताई थी, उसने दिन–रात एक कर युद्ध की अनेक कलाओं का अभ्यास किया और पूरे विश्वास से युद्ध का अभ्यास किया था। दोनों राजाओं में भीषण युद्ध हुआ और पहले शासक की सेना हताश होकर घुटने टेकने पर विवश हो गई। इस प्रकार उसकी सेना ने पहले शासक की सेना को परास्त कर दिया।

अपनी हार पर पहला शासक बौखला गया और संत के पास जाकर बोला, 'महाराज, आपकी वाणी में कोई शक्ति नहीं है। आप गलत भविष्यवाणी करते हैं।' यह सुनकर संत मुस्कुराते हुये बोले। 'पुत्र, इतना बौखलाने की आवश्यकता नहीं। तुम्हारी विजय निश्चित थी, परन्तु उसके लिये परिश्रम व पुरुषार्थ भी आवश्यक था। तुमने सब कुछ भाग्य व भविष्यवाणी पर छोड़कर अपनी पराजय को स्व आमंत्रित किया। भाग्य हमेशा पुरुषार्थी व्यक्तियों का ही साथ देता है। यही कारण है कि वह शासक जीत गया, जिसकी हार निश्चित लग रही थी।' यह सुनकर पराजित राजा हिमा संत से क्षमा माँगकर लौट गया।

अपनी बात

आत्मविश्वास एक सगुण है। यह दृढ़ इच्छा शक्ति का पर्याय है। जीवन में आगे बढ़ने का गुरु मंत्र है, सहारा है। इसका अर्थ है अपनी परिस्थितियों और समस्याओं का हल अपने आप में ढूंढना। स्वयं में निहित अंतर्शक्तियों पर अकूत विश्वास करना और इसके बल पर अपनी संकल्प सृष्टि के निर्माण में जुट जाना। इसके अभाव में समस्त साधन एवं परिस्थितियों की अनुकूलता होते हुए भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता। वास्तव में आत्मविश्वास के समान कोई दूसरा मित्र नहीं और आत्मविश्वास ही जीवन में उन्नति एवं उत्कर्ष की प्रथम सीढ़ी है। जीवन की शक्ति है।

आत्मविश्वास ही सफलता का मुख्य रहस्य है। आत्मविश्वास की मात्रा जितनी अधिक होगी, हमारा संबंध अनंत जीवन और अनंत शक्ति से उतना ही गहरा होता जाएगा। जब चारों ओर विपत्तियों के काले बादल मंडरा रहे होंगे, जब सागर में कहीं भी जीवन नैया को खड़ा करने का किनारा न मिल रहा होगा, भयंकर तूफान उठ रहे होंगे, नाव अब डूबे कि तब की स्थिति होगी, तो ऐसी स्थिति में आत्मविश्वास ही बचा सकता है। ऐसी स्थिति में आत्मविश्वास ही वह शक्ति है, जो सहस्त्रों विपत्तियों का सामना करते हुए पथिक को मंजिल तक पहुँचा सकता है।

मर्यादा पुरुषोतम राम अपने आत्मविश्वास के बल पर ही वनवास की विपत्तियों को सहते हुए सीता माता को वापस ला पाए। भगवान श्री कृष्ण ने इसी आत्मविश्वास के बल पर विषमता के अनंत चक्रव्यूहों को पग पग पर ध्वस्त करते हुए रण क्षेत्र में गीता के अमर संदेश के साथ जीवन जीने की राह सुझाई है।

आत्मविश्वास जागृत करने के लिए हर व्यक्ति को अपने जीवन संग्राम के शुभारंभ में स्वयं पर विश्वास करके चलना होता है। छोटे–छोटे सफल कदमों के साथ आगे बढ़ते हुए यह विश्वास जागृत होता जाता है और हृदय शक्ति से भरता जाता है। इसके लिए हमें स्वयं से प्यार करना सीखना होगा स्वयं का सम्मान करना होगा यदि कोई साथ न दे जो आत्मविश्वास के सहारे अकेले आगे बढ़ने का साहस करना होगा। प्रसिद्ध बांग्ला कवि रविंद्र नाथ टैगोर ने अपनी गीतांजलि में कहा है एकला चलो रे एकला चलो रे अर्थात यदि कोई तुम्हारा साथ नहीं देता है तो तुम अकेले ही चलो अकेले ही चलो। इस प्रकार अपना आदर हम स्वयं करें और देखें अपनी आत्मा की क्या दशा है। जिसके हृदय में यह ज्ञान प्रकाशित है, यह बोध जागृत है, वह अपनी संपूर्ण शक्तियों को एक केंद्र बिंदु पर टिकाते हुए आश्चर्य जनक ढंग से जीवन में उत्कर्ष के नित्य नई ऊंचाइयों को प्राप्त करता है।

आत्मविश्वास के साथ व्यक्ति भला क्या नहीं कर सकता? विश्वास हमारे लिए अथवा सागर में भी मार्ग ढूंढ निकलता है। वह हमें गगनचुंबी पर्वत शिखर को लांघने की शक्ति और प्रेरणा देता है। विश्वास ही जीवन के उस मार्ग की खोज करता है जो हमें मंजिल तक पहुंचा सके।

अस्तु शिक्षा जैसे पुनीत कार्य में संलग्न हम सभी शिक्षक, आचार्य माता–पिता और अभिभावकों को अहंकार से रहित आत्मनिष्ठा पर आधारित अपने विश्वास को जगा कर विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को जगाने के लिए सफल आत्मविश्वासी व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों को सुनाकर तथा आत्मविश्वास पर आधारित क्रियाकलापों के माध्यम से छात्रों की आत्मनिष्ठा को जागृत करने का प्रयास करना चाहिए। आत्म निष्ठ में जीवन की सफलता एवं सार्थकता का मार्ग छिपा हुआ है।

2024 की सुखद, प्रेरक स्मृतियों को संजोते हुए शुभ संकल्पों के साथ 2025 के जीवन की मंगल कामनाओं के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

पुण्यश्लोक अहिल्याबाई एवं समाज

उमाशंकर मिश्र
क्षेत्रीय बालिका शिक्षा प्रभारी

भारतीय दर्शन में पुरुष स्रष्टा है और स्त्री प्रेम स्वरूपा है। स्त्री के विशेष गुण दया और कोमलता, शान्ति और प्रेम, समर्पण और बलिदान है। स्त्री पुरूष से कहीं अधिक जानती है वह पुरूष की प्रेरणा स्त्रोत है। भारतीय महिलाओं पर पाश्चात संस्कृति हावी हो गई है। स्त्रियाँ प्रदर्शन की वस्तु बनती जा रही हैं, इसके कारण समाज में बड़ा संकट खड़ा होता जा रहा है।

भारतीय स्त्रियाँ शीलवान, चरित्रवान, धार्मिक, सेवाभावी सहृदय, योगिक, आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न शारीरिक शक्ति युक्त समाज की जीवन धारा से जोड़ने वाली माँ है। यह भूमिका काल से ही उसे शिशु काल से समाज, राष्ट्र के लिए जीना सिखाती है। वह व्यक्तिगत (कैरियर) व्यक्तित्व निर्माण नहीं करती है, सदैव अन्यों के व्यक्तित्व निर्माण करती है। अगर इसे विश्व की महिलाएं स्वीकार कर लें तो सभी समस्याओं का अन्त हो जायेगा।

भारत में महिलाओं की सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण विषय है प्राचीन काल में स्त्रियों का बड़ा सम्मान था, हर क्षेत्र में कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करती थी। रामायण काल में कैकेयी जैसी बुद्धिमती, प्रणेता रणकुशल, वीर और स्वतन्त्रप्रणेता नारी युद्ध स्थल में अपने पति के साथ युद्ध स्थल जाकर दो बार अपने पति की प्राण की रक्षा कर रण में विजय दिलायी। दुष्टों के दमन के लिए अपने प्रिय पुत्र राम को वन भेजकर एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया। गान्धारी, कुन्ती, द्रौपदी आदि के उदाहरण महाभारत काल में देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में स्त्रियों की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है।

समाज जागरण से भाग्य की सुरक्षा– सर्वे के अनुसार 80 प्रतिशत अपनी सुरक्षा से चिन्तित हैं। भारत में घरेलू हिंसा चर्चा का विषय बनी हुई है। सरकार द्वारा कानून बना कर रोकने का प्रयास किया जा रहा है पर सुरक्षा प्रत्येक स्त्री को सरकार द्वारा सुरक्षा दिया जाना सम्भव नहीं है। समाज जाग्रत होगा तभी रोका जा सकता है इसके ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर बलात्कार, ससुराल वालों द्वारा उत्पीडन, तेजाब फेकना, आदि घटनाओं को रोका जा सकता है।

हिंसा की घटनाओं के मुख्य कारण –संयुक्त परिवारों का अभाव, आपसी सहयोगी भाव की कमी, पुलिस विभाग द्वारा पर्याप्त सहयोग न मिलना तथा आसामाजिक तत्वों के अड्डे खाली स्थानों पर उनके रुकने के अड्डे और शौचालयों की कमी, खुले में शराब का सेवन आदि।

समाधान–

- स्त्रियों को आत्म रक्षा की तकनीकि का ज्ञान कराना।
- उनके मनोबल को ऊँचा उठाना।
- अनजान व्यक्ति एवं अकेले में बात न करना।
- अपनी बात अपने से बड़ों का निर्भय होकर बताना।
- मानसिक दक्षता के साथ शारीरिक बल का प्रयोग करना।
- मिर्च स्प्रे साथ लेकर चलना।
- आपात काल 112 नम्बर पर फोन कर पुलिस सहायता लेना।

स्वावलम्बन–स्वावलम्बन ही आत्म निर्भरता है। भारत

के नव–जागरण में महिलाओं के पुनः दिन लौटे हैं, फलस्वरूप स्त्रियों में जागरण हुआ है। वह प्रत्येक क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है। आज की महिलाएं पुरूषों से भी बढ़ चढ़कर प्रत्येक क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर रही हैं। पहली महिला पायलट हरित कौर देओल ने नील गगन में अपना परचम लहराया थल और नौ सेना में भी पुरूषों के बराबर सहभागिता कर रही हैं। आन्तरिक सुरक्षा, प्रशासन, वकालत, चिकित्सा, शिक्षा, अभियन्त्रण, अनुसंधान, सेवा कार्य, सामाजिक कार्य, राजनैतिक क्षेत्र, अन्तरिक्ष, उद्योग, कृषि, खेल जगत प्रतिमान स्थापित किए हैं।

स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने स्त्री और पुरूष को समान अधिकार दिए हैं। जिस प्रकार एक पक्षी को पंख के सहारे सम्भव नहीं है, वैसे ही हमारा देश केवल पुरुषों के सहारे प्रगति नहीं कर सकता है। स्त्री स्वातन्त्रता के बाद हमारी महिलाओं ने पुरूष वर्चस्व क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किए हैं इन्दिरा गाँधी, प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, मीरा कुमार, सुषमा स्वराज, निर्मला सीतारमन ने राजनीति में पाहिल बागडोर संभाली है। प्रशासनिक क्षेत्र किरण देवी ने अपराधियों को मुख्य धारा से जोड़ने का काम किया है। इस धरती की बेटी भारतीय नारी है। उसको प्रत्येक क्षेत्र में जाने की स्वतन्त्रता चाहिए। वह अपने कैरियर का चयन कर नैतिक मूल्यों को स्थापित कर सके।

परिवार प्रबोधन– भारतीय परिवार दुनियाँ के श्रेष्ठ परिवार परम्परा का उदाहरण थे। पर आज समाज में पाश्चात संस्कृति एवं सीमित परिवार देखने को मिल रहे है। संयुक्त परिवार न होने के कारण बच्चें संस्कार विहीन हो रहे है। परिवार और रिस्ते भूल गये है। आन्टी और अंकल परिवार के नाते जाने जाते है।

गुरू नानक

संकलन कर्ता
चन्द्रपाल सिंह
पूर्व प्रधानचार्य

गुरु नानक देव जी सिक्ख धर्म के संस्थापक और पहले गुरु थे। इनका जन्म रावी नदी के किनारे स्थित तलवण्डी नामक गाँव में कार्तिकी पूर्णिमा को हुआ था। तलवण्डी पाकिस्तान में पंजाब प्रान्त का एक नगर है। आज कल यह 'ननकाना' नाम से जाना जाता है। इनके पिता कल्याणदास मेहता कालू खत्री के नाम से जाने जाते थे। इनकी माताश्री का नाम तृप्ता–देवी था। बड़ी बहन का नाम नानकी था। अतः नानकी के छोटे भाई होने के कारण नवजात बालक का नाम नानक रखा गया। नौ वर्ष की अवस्था में उनका यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। इस समय उन्होंने जनेऊ को परिभाषित करते हुए कहा –''दया की कपास, संतोष का सूत, संयम की गाँठ वाला जनेऊ यदि आपके पास हो तो मैं उसे धारण करने के लिए तैयार हूँ।''

बचपन से ही बालक नानक साधू–सन्तों की सेवा में तत्पर रहते तथा गरीबों की सहायता करते थे। एक बार उनके पिता ने कुछ धन देकर उन्हें सौदा करने भेजा तो उन्होंने वह धन मार्ग में मिलने वाले भूखे साधू–सन्तों को भोजन कराने में व्यय करके कहा–''भूखे साधुओं को भोजन कराना ही सच्चा सौदा है।''

नानक की प्रवृत्ति प्रारम्भ से ही वैराग्य की ओर थी । अतः इनको घर गृहस्थी के बंधन में बाँधने के लिए इनका विवाह सुलक्षिणी देवी से करा दिया गया। इस समय इनकी अवस्था 12 वर्ष की थी। सुलक्षिणी देवी से इनको श्रीचन्द और लखमीदास दो पुत्रों की प्राप्ति हुई। पर संसार के बंधन इनको न बांध सकें। कहा जाता है कि एक बार नदी में स्नान करने के लिए उन्होंने डुबकी लगाई तो तीन दिन के बाद ही बाहर निकले। यही से उन्हें सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ। तब उन्होंने मानवता की सेवा के लिए गृहत्याग किया और भक्ति गीत गायक मरदाना तथा अपने एक सेवक को लेकर ईश्वर भक्ति तथा धर्म के प्रचार के लिए निकल पड़े।

ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी भारत वासियों के लिए एक कालीशताब्दि थी। मुसलमानों के अत्याचार के कारण पूरे भारत में फैली अराजकता एवं लूट–खसोट के कारण जन–जीवन असुरक्षित हो गया था। हिन्दू धर्म, कर्म–काण्ड तथा कुप्रथाओं को जटिलता में उलझ गया था। भय के कारण अनेक हिन्दू अपना धर्म त्याग कर विधर्मी होते जा रहे थे। धर्म एवं मानवता आस्था समाप्त हो गई थी।

इसी समय बाबर का भारत पर आक्रमण हुआ। उस समय नानक सैयदपुर में थे। नगरवासी भाग मये गए। मुगलो की सेना ने नानक और मरदाना को बन्दी बना लिया। उनके सिर पर बोझ लाद दिया गया पर नामक इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने बाबर के घोर अत्याचारों की निन्दा करते हुए कहा भगवान से कहा कि मौत का दूत बनकर बाबर हिन्दुस्तान पर चढ़ आया है, इतने अत्याचारों को देखकर भी तुझे मानवता पर तरस नहीं आया। वे ईश्वर भजन करते हुए आगे बढ़ने लगे। नानक और अन्य बंदियों को भारी भरकम चक्कियाँ पीसने के लिए कहा गया। नानक ने अब अपना चमत्कार प्रकट किया। चक्कियाँ अपने आप चलने लगीं। यह समाचार बाबर तक पहुंचा। वह महान सन्त के दर्शन करने गया और उसने अपराध के लिए क्षमा मांगी। गुरु नानक देव की आज्ञा से बाबर ने सभी बन्दियों को मुक्त कर दिया।

नानक धर्म प्रचार के लिए विब्बत, मानसरोवर तथा चीन तक गए। चीन में गुरु के आगमन पर एक शहर का ही नाम नानकिंग रखा गया है। उन्होंने सउदी अरब, फिलस्तीन, ईराक, अफ्रीका तथा बगदाद की भी यात्राएं की। बगदाद में जाकर उन्होंने मुसलमानों के धर्म गुरु खलीफा को उपदेश दिए। ये उपदेश 'नसीहत

नामा' में संग्रहीत हैं। उन्होंने मक्का की भी यात्रा की और इस्लाम के मुख्य प्रमुख प्रचारकों से उसको चर्चा की। कहा जाता है कि नानक जी उपासना स्थल की ओर पैर पसारकर सो रहे थे। उपासना स्थल से अधिकारियों ने इसका विरोध करते हुए कहा–''आप कैसे सन्त हैं जो परमेश्वर की ओर पैर पसारकर सो रहे हो। इस पर नानक ने हँसकर कहा –''अच्छा, आप मेरे पाँव उस ओर कर दीजिए जिस ओर परमात्मा का निवास नहीं है।''

गुरु नानक ने पीड़ित और शोषित व्यक्तियों में आत्मविश्वास का संचार किया और मानवता के प्रति आशा और आस्था उत्पन्न की। उन्होंने अपने शिष्यों को सत्य, भाईचारा, त्याग, बलिदान एवं सेवा करने के लिए प्रेरित किया। उनका जीवन एक सच्चे कर्मयोगी का आदर्श था। उन्होंने यह शिक्षा दी कि असली संन्यास संसार में रहकर मानवता की सेवा करने में है, न कि थर द्वार त्यागकर जंगल में जाने में। वे स्वयं अपने खेताँ में काम करते थे। 'किरत करो तथा मिलकर खाओ। यह उनके उपदेश श्रम का स्वाभिमान जाग्रत करते हैं। सामाजिक समरसता के लिए लंगर की परम्परा भी उन्होंने चलाई।

नानक जी ने अपने जीवन का अन्तिम समय करतारपुर में व्यतीत किया। भाई लहणा जी उनके परम प्रिय शिष्य थे। नानक जी ने कई बार लहणा जी की गुरु भक्ति की परीक्षा ली। ये भाई लहणा जी ही आगे चलकर गुरु अंगद के नाम से सिक्ख पंथ के दूसरे गुरु कहलाये।

22 सितम्बर 1539 विक्रम संवत 1595 की आश्विन शुक्ल दशमी को गुरु जी ने अपनी देह विसर्जित कर महा प्रयाण किया।

वे स्चनाकार भी थे। उनकी रची प्रमुख कृतियाँ हैं– जपुजी, आसादीवार, रहिरास और कीर्तन सोहिला। उनके सबद, साखी और सलाग (श्लोक) गुरु ग्रन्थ साहब में संग्रहीत हैं।

प्रेरक प्रसंगा –गुरु नानक एक बार घूमते–घूमते एक गाँव में उपदेश देने के लिए ठहर गए। ग्राम वासियों ने उनका स्वागत बड़े प्रेम से किया। काफी लोगों ने ध्यान से उनका उपदेश सुना।

दूसरे दिन नानक जी चलने लगे, तो उन्होंने ग्राम वासियों को आशीर्वाद दिया– 'उजड़ जाओ।' शिष्यों ने सुना तो दंग रह गए, पर कुछ बोले नहीं।

शाम होते–होते वे दूसरे गाँव में जा पहुंचे। यह गाँव बदमाशों का था। वहाँ के लोगों ने उनका खूब तिरस्कार किया। कटु वचन भी कहा। वे तो लड़ने–झगड़ने तक को भी उतारू हो गये। नानक जी वहाँ से दूसरे दिन रवाना हुए तो हँसते हुए बोले, आबाद रहो।

यह सुनकर शिष्यों को आश्चर्य हुआ। एक शिष्य से नहीं रहा गया। वह पूछ बैठा – भगवन। आपने बड़े आशीर्वाद दिये हैं। स्वागत सत्कार करने वालों को तो आपने उजड़ जाने का आशीर्वाद दिया और तिरस्कार करने वालों को 'आबाद रहने का।' आखिर इन विभिन्न आशीर्वादों का रहस्य तो बताइये। नानक जी की मंद–मंद मुस्कराहट बिखर पड़ी। हँसते हुए बोले– ''सज्जन लोग उजड़ेंगे तो वे जहाँ भी जायेंगे, अपनी सज्जनता के बल पर उत्तम वातावरण बना लेंगे, पर दुर्जनों का तो एक ही जगह बँधे रहना शुभ है।''

बुद्ध का संदेश

एक बार एक निर्धन व्यक्ति ने महात्मा बुद्ध से पूछा, मैं इतना गरीब क्यों हूँ?' बुद्ध ने कहा, 'तुम गरीब हो क्योंकि तुमने देना नहीं सीखा।' गरीब आदमी ने कहा, 'महात्मन, लेकिन मेरे पास तो देने के लिये कुछ भी नहीं है।' बुद्ध ने कहा, तुम्हारे पास देने को बहुत कुछ है। तुम्हारा चेहरा एक मुस्कान दे सकता है, तुम्हारा मुँह किसी की प्रशंसा कर सकता है, किसी को राहत पहुँचाने के लिये मीठे वचन बोल सकता है, तुम्हारे पास हाथ हैं, जो किसी अभावग्रस्त, निर्बल व्यक्ति की सहायता कर सकते हैं। जब तुम इतना सब दूसरों को दे सकते हो तो तुम गरीब कैसे हो सकते हो? वास्तविक दरिद्रता मन की होती है साधनों की नहीं।'

मकर संक्रान्ति

देवेन्द्र तिवारी

मकर संक्रान्ति हमारे देश का प्रमुख पर्व है। यह पर्व सम्पूर्ण भारत में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति का पर्व भारत के अतिरिक्त नेपाल के सभी प्रान्तों में अलग–अलग नाम व भाँति–भाँति के रीति रिवाजों द्वारा भक्ति एवं उत्साह के साथ मनाया जाता हैं। मकर संक्रान्ति के दिन किसान अपनी अच्छी फसल के लिए भगवान को धन्यवाद देकर अपनी अनुकम्पा को सदैव बनाये रखने का आशीर्वाद मांगते है। इसीलिए इस पर्व को फसलों एवं किसानों के त्योहार के नाम से भी जाना जाता है।

यह पर्व प्रतिवर्ष पौष मास ऑग्लमाह जनवरी के 14 या 15 दिनांक को मनाया जाता है। इस दिन सूर्य धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करता है। सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाने की प्रक्रिया को संक्रान्ति कहते है। चूंकि सूर्य जब धनुराशि से मकर राशि में जाता है तो उसे मकर संक्रान्ति कहते है।

मकर संक्रान्ति का पर्व देशभर में प्रान्तों के अनुसार अलग–अलग नामों से मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरायण होते हैं मान्यता के अनुसार इस दिन से ही ऋतु परिवर्तन आरम्भ हो जाता है। मकर संक्रान्ति से सर्दी में कमी आने लगती है दिन लम्बे व राते छोटी होने लगती है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मकर राशि के स्वामी शनि देव है शनि सूर्य के पिता भी है। पिता–पुत्र का सम्बंध होने के बाद भी पिता–पुत्र में नहीं बनती यानि इनके आपस में सम्बंध मधुर नहीं माने जाते है इसके बाद भी सूर्य पुत्र की राशि में एक माह के लिए आते है। एक माह तक पिता–पुत्र के घर में रहते है। मकर राशि में सूर्य का गोचर कई मामलों में शुभ फल देने वाला माना गया है।

मकर संक्रान्ति को खिचड़ी के नाम से भी जाना जाता है इस दिन गंगा आदि पवित्र नहीं में स्नान करते है। मुख्य रूप से मकर संक्रान्ति का पर्व स्नानदान का पर्व कहलाता है। इस पर्व पर उड़द, चावल, तिल, चिउड़ा, गौ, स्वर्ण, ऊनी वस्त्र, कम्बल आदि का दान करना पुष्य प्रदान करने वाला माना गया है।

ऐसा विश्वास है कि मकर संक्रान्ति से पूर्व खरमास रहता हैं जिसमें शुभ कार्य विवाह आदि नहीं होते है। मकर संक्रान्ति से ही शुभ दिन प्रारम्भ होते हे और सभी शुभकार्यों का प्रारम्भ हो जाता है। इसी अवसर पर प्रयाग में गंगा, यमुना, सरस्वती के पावन संगम पर माघ मेले का प्रतिवर्ष आयोजन होता है जो एक माह तक चलता है। जिसमें लाखों लोग आकर इस पवित्र संगम में स्नान करते है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर गंगा सागर में भी प्रतिवर्ष मेला लगता है। देश के कोने–कोने से लाखों लोग गंगा सागर में स्नान के लिए आते हैं। मकर संक्रान्ति के दिन ही गंगा भगीरथ के पीछे–पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थी इसीलिए इसे गंगा सागर कहा गया। इस दिन गंगा सागर में स्नान दान के लिए लाखों लोगों की भीड़ उमड़ती है। लोग कष्ट उठाकर गंगा सागर की यात्रा करते है। वर्ष में एक दिन मकर संक्रान्ति को यहां लोगों की अपार भीड़ होती है। इसीलिए कहा जाता है–

"सारे तीरथ बार–बार
गंगा सागर एक बार"।

दृढ़ निश्चय व समर्पण सफलता के स्रोत

कमल कुमार संयोजक
भारतीय शिक्षा परिषद प.उ.प्र.
नेहरू नगर–गाजियाबाद

साहसी बनो, निर्भीक बनो, बहादुर बनो और कुछ करो, असम्भव कुछ भी नहीं है। कोई भी बाधा तुम्हें नहीं रोक सकती। एक बार यदि आपने कुछ करने का मन बना लिया और अडिग चट्टान की भांति खड़े हो गये तो आपको अपना लक्ष्य प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता है।

1. आशा व आकांक्षा मन में हो– आशा और महत्वाकांक्षा के साथ अपने संकल्प की बाग डोर थामें, दूर दृष्टि रखकर योजना बनायें। इस प्रकार ध्यान रखने की आवश्यकता है कि इन सबसे ऊपर सबसे महत्वपूर्ण है कर्म करना। आपके हृदय में आकांक्षा है, मस्तिष्क में आशा है और मन दृढ संकल्प है किन्तु कार्य करने में विश्वास नहीं है तो आप कदापि सफलता की सीढ़ी पर नहीं चढ़ सकते। कर्मकरना बहुत ही आवश्यक है।

2. तय करें कि चाहते क्या हैं– विचलित न हों, हिचकिचायें नहीं, घबरायें नहीं, जब तक काम पूरा न हो विश्राम न करें। अनवरत आगे बढ़ते रहें। यह जानने का प्रयत्न करें कि आप क्या चाहते है? दत्तचित्ता और दृढ़ निश्चचय के साथ कार्य प्रारम्भ करें। आप जो इच्छा रखते है, उसे पूरी करने से ही आपको सफलता मिलती हैं। अतः आरम्भ से ही आपको यह जानना होगा कि आप चाहते क्या हैं? यदि आप यह नहीं जानते कि आप क्या चाहते हैं? तो उसे प्राप्त करने का प्रश्न ही उत्पन्न् नहीं होता।

3. उद्देश्य हमेशा ऊंचा रखें– अपना कोई लक्ष्य, कोई ध्येय अवश्य होना चाहिए। आप अपने संकल्प, योग्यता, दक्षता, झुकाव के आधार पर अपना लक्ष्य निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र हैं। उद्देश्य हमेशा ऊंचा रखना चाहिए, अपनी आकांक्षाओं की सीमा आकाश की तरह अनन्त होनी चाहिए। गांधी जी एक कृशकाय व्यक्ति थे फिर भी उन्होंने बिटिश साम्राज्य को चुनौती दी। हम प्रति वर्ष गांधी जी का जन्म दिन मनाते हैं। लेकिन केवल गांधी जी का स्मरण ही करते हैं उनके सिद्धांत व दर्शन का नहीं। यदि हम उनके जीवन को देखें तो हम सभी के लिए वह महान संकल्प दृढ़ता, व प्रेरणा का पुंज बन सकता है।

4. स्वयं के साथ पारदर्शिता रखें– आप जीवन में जो भी बनना चाहते है उसकी कल्पना करें कि आप नेता, अभिनेता उद्योगपति, इंजीनियर, डॉक्टर, व्यवसायी, वकील, जज बनना चाहते है। आप अपनी इस आकांक्षा की वास्तविकता से परिचित हो। स्वंय के साथ पूरी पारदर्शिता रखें। प्रारम्भ में आपकी अभिलाषा एक दिवास्वप्न और हवाई किला नजर आएगी, परन्तु चिन्तित व भयभीत न हों जो आज असम्भव दीख रहा है वह आपके दृढ़ निश्चय, समर्पण व अध्यवसाय कल सम्भव हो जायेगा।

5. आपकी पहुंच से बाहर कुछ नहीं– चाहे परमाणु बम हो या हवाई जहाज सभी के परिपेक्ष्य में यही सच रहा है, – सफलता का राज, सामर्थ्य का स्रोत, शक्ति का केन्द्र, समृद्धि की आधार शिला, प्रसिद्धि व गौरव का स्वर्णिम पृष्ठ ये सभी आपकी पहुंच से बाहर नहीं हैं। अपने आत्मविश्वास व इच्छा शक्ति के बल पर आप सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। आप जानिए और इस वास्तविकता की अनुभूति कीजिए कि आप और केवल आप ही अपने भाग्य के विधाता हैं, अपनी आत्मा के स्वामी है, आप जैसा चाहे भाग्य बना सकते हैं। आप नौजवान हैं, देश के लिए अपनी क्षमताओं का उपयोग कर सकते हैं।

6. दृढ़ता के साथ टिके रहें– जरूरी नहीं कि आज के नौजवान युवा नेता भगत सिंह की तरह फाँसी

के फन्दे पर ही चढ़ें, चाँद और मंगल पर भी चढ़कर देश को गौरवान्वित कर सकता है। यह जरूरी नहीं की देश की बेटियाँ रानी लक्ष्मीबाई की तरह तलवार लेकर घोड़े पर ही दौडें, गोल्ड मेडल प्राप्ति की लालसा में हिमा दास की तरह ट्रैक पर भी दौड़ सकती हैं और अपने देश का नाम रोशन कर सकती हैं। बस दृढ़ता चाहिए।

7. आपदा को अवसर में बदलें– जिस दिन इस देश का युवा दृढ़ संकल्पित हो जाएगा। जिस दिन इस देश का युवा शिक्षा, चिकित्सा, ज्ञान, विज्ञान तकनीकी, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों के माध्यम से देश की, आपकी, मेरी, हम सबकी आवाज को बात, बात को विचार, विचार को योजना और योजना को धरातल पर सफलता पूर्वक क्रियान्वित करने का दृढ़ संकल्प लेगा। जिस दिन इस देश का युवा स्वामी विवेकानंद,कलाम, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शो को दिल की गहराईयों से हृदय में उतार लेगा। उसी दिन से उभर रहा होगा हम सबके सामने अखण्ड, अद्भुत, अद्वितीय, श्रेष्ठ, सम्पन्न, मजबूत, विकसित भारत का भविष्य। यह ध्यान रहे देश का लगभग 65% हिस्सा युवाओं का है। मेरे विचारों में ये युवा आपदा को अवसर में परिवर्तित करने की सार्मथ्य रखता है। दृढ़ निश्चय व समर्पण के साथ लगे रहें, नियमित्तता बनी रहे सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी।

लक्ष्य की गाड़ी में एम. आर. एफ के नहीं,

हौंसले के टायर लगवाइये।
कर्म का इंजन सेट कर,
मेहनत के पसीने का पैट्रोल डलवाइये॥
आत्म विश्वास का स्टेयरिंग पकड़कर,
उत्साह का एक्सीलेटर घुमाएं।
विवेक रूपी ब्रेक ले, वीरान पथ पर,
या भीड़ में सजगता से बढ़ते जाएं॥
बुध्दि का प्रयोग कर संकल्प शक्ति के साथ,
जो हमेशा आगे बढ़े हैं।
उनको शुभाशीष देने के लिए,
देवता हमेशा आगे खड़े हैं।

पुत्र-पुत्री में भेदभाव अनुचित

संत रामचंद्र के पास लोग अक्सर अपनी समस्याओं के समाधान हेतु आते थे। वह अपनी विवेकपूर्ण बुद्धि से कठिन से कठिन समस्या को पल भर में सुलझा देते थे। एक बार उनका एक भक्त उनके पास आया और बोला, 'महाराज, मेरे परिवार में पर्याप्त सुख है, अपार धन–संपत्ति है, संतान भी हैं लेकिन केवल दो पुत्रियाँ हैं। कोई पुत्र नहीं है। बिना पुत्र के मुझे अपना जीवन अपूर्ण दिखाई देता है।'

संत जी बोले, 'तुम पुत्र प्राप्ति के लिये इतने लालायित क्यों हो?' इस पर वह व्यक्ति बोला, 'महाराज, पुत्र के बिना मुझे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी।' भक्त का विचार सुनकर संत बोले, 'क्या तुमने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जिसकी केवल पुत्रियाँ हों और उसे मोक्ष की प्राप्ति न हुई हो।' भक्त बोला, 'महाराज, मैंने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा तो नहीं है परन्तु इस तरह की बातें सुनी अवश्य हैं।'

इस पर संत जी ने कहा, 'जिस तथ्य को तुमने स्वयं देखा नहीं, उसे मानते क्यों हो? जीवन में असंगत, तर्कहीन व सुनी–सुनाई बातों पर विश्वास करना अपने जीवन को व्यर्थ करने जैसा है। मैं अनेक ऐसे परिवारों से परिचित हूँ जो कई पुत्रों के होते हुये भी अपने जीवन से संतुष्ट नहीं हैं। एक संस्कारयुक्त बेटी संस्कारशून्य पुत्रों से कहीं बेहतर है। पुत्र या पुत्री होने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। तुम दोनों पुत्रियों को ही पुत्र तुल्य मानकर अपना उत्तराधिकारी मानो। उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाओ। उनका भली–भाँति पालन पोषण करो व पुत्र–पुत्री में भेदभाव की संकीर्ण सोच से ऊपर उठकर उनके व अपने उज्जवल भविष्य की कामना करते हुये जीवन जियो।

भूखे रहकर देश-सेवा

फरार अवस्था में आजाद को केवल पुलिस के दूतों का ही खटका नहीं रहता था, वरन् निर्वाह की समस्या भी बड़ी गम्भीर हो जाती थी। बनारस में भागते समय उनके पास कुछ रुपया–पैसा तो था नहीं। किसी से रेल–भाड़े आदि के लिये कुछ रुपया लेकर चल दिये। झाँसी में आरम्भ में मास्टर रुद्रनारायण के यहाँ ठहरे तो वहीं भोजन करते। पर एक साधारण गृहस्थी में सदैव उचित व्यवस्था हो सकनी कठिन है। फिर आजाद का पहलवानी शरीर, अतएव उनको अनेक बार भूखों ही रह जाना पड़ता था। फिर जब मोटर ड्राइवरी की शिक्षा प्राप्त करने लगे तब भी उनको पैसे की तंगी बनी रहती थी। उस समय का वर्णन करते हुए वैशम्पायन ने अपनी पुस्तक में लिखा है– ''अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद''

''जिन दिनों रामानन्द जी के साथ आजाद रेलवे लाइन की गुमटी पर रहते थे उन दिनों उन्हें भीषण आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता था। कई दिन तो केवल एक समय चबैना खाकर ही गुजारा कर लेते थे। एक बार उनके पास केवल एक आना ही बाकी था, जिससे एक दिन की भूख की समस्या हल हो सकती थी। यह भी विचार आता था कि आज यह एक आना खर्च हो गया तो कल क्या होगा? फिर भी आज भूख की ज्वलन्त समस्या का हल करना आवश्यक था। इसलिए एक आने के चने ले आये और खाने लगे। खाते–खाते आखिरी मुट्ठी जो भरी तो उसमें कुछ गोल–गोल सा लगा। मुट्ठी खोलकर देखा तो वह इकन्नी थी। आजाद ने कहा ''उस इकन्नी को देखकर मुझे हँसी आ गई यह सोचकर कि चलो कल की भी व्यवस्था हो गई। पर फिर यह ध्यान आया कि यह तो उस गरीब चने वाले की गाढ़ी कमाई का पैसा है, उस पर मेरा कोई अधिकार नहीं।'' चबैना खाकर पानी पिया और इकन्नी उस चना वाले को लौटा आये, यह कहकर कि तुमने मुझे जो चने दिये थे उसमें यह इकन्नी आ गई थी। दुकानदार ने उस इकन्नी की ओर देखा और एक बार मेरी ओर देखकर मुस्करा दिया। मैं भी मुस्करा कर अपने रास्ते चल दिया। पर कल की भूख प्रश्न चिह्न बनी रही और ऐसे निराहार दिवस तो उनके संगी साथी ही थे। लगातार कई दिनों तक ठीक से भोजन मिलना उनके लिये अनहोनी बात थी।

आजाद को उन दिनों सूखी रोटियों से पेट भरने में भी कितनी कठिनाई उठानी पड़ती थी, यह श्री भगवानदास माहौर के उस वर्णन से विदित होता है जो उन्होंने ''यश की धरोहर'' में लिखा है–

''श्री आजाद की भोजन व्यवस्था के लिये हम लोगों को घर से रोटियाँ चुरानी पड़ती थीं। भोजन मुझे माँ के हाथों चौके में बैठकर मिलना था। रोटियों के बर्तन तक तो मेरी पहुँच थी नहीं। चौके के अन्दर जो एक भीतरी चौका रहता है, उसकी रेखा तो मेरे लिए लक्ष्मण–रेखा थी। इस रेखा को लाँघ कर बर्तन में से दो–चार रोटियाँ चुरा लेने का साहस मैं नहीं कर सकता था। बस यही एक रास्ता था कि बहुत–सी रोटियाँ माँ से अपनी थाली में परोसवा लूँ, और थाली उठाकर अपने कमरे में चल दूँ। उनमें से कुछ मैं खा लूँ और कुछ आजाद के लिये बचा लूँ। जब मैंने ऐसा किया तो माँ भयंकर रूप से नाराज हुई। एक रोज तो खाने को ही नहीं मिला। मगर मैं अपनी 'जिद' पर डटा रहा कि ''चौका में धुँआ बहुत होता है और मेरी आँखें में रोहे हैं। कॉलेज के डॉक्टर ने धुएं से बचे रहने को कहा है। मुझे अंधा थोड़े ही होना है। खाना दो, चाहे मत दो, मैं धुएं में हर्गिज नहीं खाऊँगा।'' यह तर्क भी आजाद का सिखाया हुआ था। भला कौन माँ चाहेगी कि बेटे की आँखें खराब

हो जायें?''

''आजाद घर आये तो माँ ने उनसे शिकायत की। माँ को सुनाने के लिये आजाद ने भी मुझे झिड़का और चौका–विज्ञान पर एक लेक्चर दे डाला। जब मैंने अपनी आँखों का तर्क दिया तो आजाद निरुत्तर हो गये और कहने लगे 'आखिर अपना–धर्म भी तो होता है। कुछ कट्टर ब्राह्मण और आदर्श बेटा हरिशंकर ने जब मान लिया तो माँ के लिये तो मानो खुदा ने ही मान लिया और रोटियों की चोरी करने का मेरा मार्ग खुल गया। मुझे अधिक भूख लगती देख माँ और प्रसन्न होती। भाई सदाशिव और विश्वनाथ भी इसी प्रकार घर से रोटियाँ चुरा लाते। आजाद को इस प्रकार चुराई हुई रोटियों से पेट भरते देख एक बार मेरी भावुकता उमड़ी कि ''हम सब तो बड़े आराम से तरह–तरह का भोजन करते हैं और आपको प्रायः नित्य ही इसी प्रकार बासी सूखी रोटियों और आचार से पेट भरना पड़ता है।'' तो आजाद बोले– ''अरे बेवकूफ हुआ है। तीन घर से तीन तरह की रोटियाँ आती हैं। किसी के यहाँ से आम का आचार, किसी के यहाँ से नीबू का। तेरे घर से करेले का आचार तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। इतना विविध प्रकार का खाना खाता हूँ और क्या चाहिये?''

आप इस दृश्य की तुलना आजकल के ''देश भक्तों'' से करें जिन्हें खाने के लिये दूध मलाई ही नहीं फलों के रस की जरूरत पड़ती है। जिनकी नित्य–प्रति होने वाली दावतों में सैकड़ों रुपये के खाद्य पदार्थ रकाबियों में ही छोड़ दिये जाते हैं और वहाँ देश के लिये प्राणों की बाजी लगाने वाले आजाद के लिये बासी सूखी रोटियाँ भी स्वादिष्ट पदार्थ थीं। उनका भी सदा मिलना कठिन होता था। इसी को सच्चा त्याग और तपस्या कहें तो क्या अनुचित है। देशोद्धार के लिये की गई इस तपस्या का ही परिणाम है, कि वह आज भी मरने के बाद पूजे जा रहे हैं।

वह था भारत का महान क्रांतिकारी

एक बार कुछ छात्रों ने मिलकर एक पहाड़ी पर पिकनिक मनाने की योजना बनाई। यह तय किया गया कि सभी अपने–अपने घर से खाने–पीने का कुछ न कुछ व्यंजन लेकर आयेंगे। एक छात्र बोला, ''मैं खीर लाऊँगा।'' दूसरा बोला, ''मैं पूरी–सब्जी लाऊँगा।'' तीसरा बोला, ''मैं मिठाई लाऊँगा।'' चौथा बोला, ''मैं तो अपने घर से कुछ फल ले आऊँगा।'' इस प्रकार, सभी छात्रों ने अपने–अपने व्यंजन बता दिये।

उनमें से केवल एक छात्र चुप था। स्कूल से घर लौटने पर उसने यह बात अपनी माँ को बताई। बेटे की बात सुनकर माँ उदास हो गई। बात यह थी कि वे बहुत गरीब थे और वह छात्र जानता था कि खाने के किसी सामान की व्यवस्था उसके माता–पिता नहीं कर पायेंगे। कुछ देर बाद घर में पिता ने प्रवेश किया। माँ ने पिता को बेटे की पिकनिक के बारे में बताया। दुर्भाग्यवश, उस दिन पिता की जेब भी खाली थी। लेकिन वह अपने बेटे का दिल तोड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने निश्चय किया कि वह पड़ोसियों से उधार माँगकर बेटे की इच्छा अवश्य पूरी करेंगे।

जब पिता जी पड़ोसी के घर जाने लगे तो बेटा दौड़कर उनके पास गया और पूछा, 'पिता जी, आप कहाँ जा रहे हैं।' पिता बोले, श्बेटा, पड़ोसी से कुछ रुपये उधार लेने जा रहा हूँ ताकि तुम्हारी पिकनिक के लिये सामान की व्यवस्था की जा सके। पिता की बात सुनकर बेटा बोला, 'नहीं पिता जी, उधार माँगना उचित नहीं है। वेसे भी मेरा पिकनिक पर जाने का मन नहीं है। यदि जाना हुआ तो घर में कुद खजूर पड़े हैं, मैं वही ले जाऊँगा। खजूर बहुत पौष्टिक और स्वादिष्ट होते हैं।' बेटे की बात सुनकर उसके माता–पिता भावक हो गये। ऐसा स्वाभिमानी दृष्टिकोण वाला उनका बेटा महान क्रांतिकारी और देशभक्त लाला लाजपतराय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

उस रोज दिवाली होती है.....

– स्वर्गीय अटलबिहारी बाजपेयी

जब मन में हो मौज बहारों की
चमकाएँ चमक सितारों की,
जब खुशियों के शुभ घेरे हों
तन्हाई में भी मेले हों,
आनंद की आभा होती है
उस रोज 'दिवाली' होती है।

जब प्रेम के दीपक जलते हों
सपने जब सच में बदलते हों,
मन में हो मधुरता भावों की
जब लहके फसलें चावों की,
उत्साह की आभा होती है
उस रोज दिवाली होती है।

जब प्रेम से मीत बुलाते हों
दुश्मन भी गले लगाते हों,
जब कहीं किसी से वैर न हो
सब अपने हों, कोई गैर न हो,
अपनत्व की आभा होती है
उस रोज दिवाली होती है।

जब तन–मन–जीवन सज जाएं
सद्–भाव के बाजे बज जाएं,
महकाए खुशबू खुशियों की
मुस्काएं चंदनिया सुधियों की,
तृप्ति की आभा होती है
उस रोज 'दिवाली' होती है..

उचित क्रोध

महाराजा रणजीत सिंह के जनरैल सरदार हरिसिंह नलवा कश्मीर में थे, जब उन्हें महाराजा का सन्देश मिला कि पठानों की फौजें अटक के उस पार आ गई हैं, वहाँ पहुँचो, उन्हें हटाओ। सरदार हरिसिंह नलवा तेजी के साथ कश्मीर से अटक की ओर बढ़े। वह गढ़ी हबीबुल्ला के मार्ग में एबटाबाद की ओर बढ़ रहे थे कि दोमेल के निकट रहने वाले पठानों ने मार्ग देने से मना कर दिया। नलवा ने कहा–तुम क्या चाहते हो? तुम्हारे साथ मुझे लड़ना नहीं है।'

पठानों ने कहा–''लड़ना हम भी नहीं चाहते, परन्तु हमारी कुछ शर्तें हैं। उन्हें माने बिना आगे नहीं जा सकते हो।'

सरदार हरिसिंह नलवा ने सारी बात को मजाक समझा, पूछा– 'क्या शर्तें हैं?'

पठानों ने कहा–'आज शाम को हम आपस में फैसला करके बतायेंगे।'

नलवा ने कहा–'कोई बात नहीं, आप शाम को बताइये। हम कल चले जायेंगे।' परन्तु जिस बात को नलवा ने मजाक समझा था, वह उसके लिए समस्या बन गई। शाम हो गई, कोई शर्त बताई न गई। दूसरे दिन भी शर्त तय न हुई। तीसरे दिन भी नहीं हुई। पठान मार्ग रोके खड़े थे। नलवा जी उनसे बिना लड़े आगे बढ़ना चाहते थे। समय व्यतीत हुआ जाता था। शर्तों का निर्णय होने में नहीं आता था। हरिसिंह चकित थे, करें तो क्या करें?

एक रात वह सो रहे थे तो ठप ठप की आवाजें सुनकर जाग उठे। पास खड़े पहरेदार से उन्होंने पूछा– 'ये आवाजें कैसी हैं?'

पहरेदार ने कहा–'साहब वर्षा हो रही है।'

हरिसिंह बोले– 'वर्षा की आवाज मैं भी सुनता हूँ, परन्तु यह ठप ठप क्या हो रहा है?'

पहरेदार ने कहा–'सरकार, सब लोग अपनी छतों पर चढ़कर मिट्टी को कूट रहे हैं। इस प्रदेश की मिट्टी ही ऐसी है कि कूटे–पीटे बिना ठीक नहीं रहती।'

हरिसिंह एकदम चौंक उठे, बोले–''क्या कहा तुमने? एक बार फिर कहो तो !''

पहरेदार ने कहा–'सरकार इस इलाके की मिट्टी ही ऐसी है। कूटे–पीटे बिना दुरुस्त नहीं होती।'

नलवा जी हँसकर बोले– 'यह मेरी ही गलती थी कि मिट्टी की विशेषता को मैं नहीं समझ पाया। सेना को आज्ञा दो कि इसी समय पठानों पर आक्रमण कर दो। जो मिले, उसको वहीं पीट डालो!'

थोड़ी देर में सब ओर मार–पीट होने लगी। प्रातःकाल होने से पहले कितने ही पठान गर्दनों में पल्लू डाले मेरे पास आये। हरिसिंह गरजकर बोले–'क्या चाहते हो?'

पठानों ने सिर झुकाकर कहा–'कुछ नहीं श्रीमन्।'

हरिसिंह बोले–''क्या शर्तें हैं तुम्हारी?'

पठानों ने कहा–'सरकार कोई शर्त नहीं। मार्ग साफ है। आप जाइए, कोई आपको रोकेगा नहीं।'

यह है ठीक और उचित क्रोध, जो घर से बाहर और देश की रक्षा के लिए, उसकी स्वतंत्रता के लिए और धर्म की रक्षा के लिए किया जाये ! ऐसा क्रोध आत्मदर्शन के मार्ग में रुकावट नहीं। वह क्रोध, जो घर में किया जाये, स्वार्थ के लिए किया जाये। ऐसा क्रोध घर को, परिवार को, जाति को, देश को, सबको नष्ट कर देता है। ऐसा क्रोध बुद्धि को नष्ट कर देता है। बुद्धि के नाश होने से सर्वनाश होता है।

एक पत्र शिक्षक के नाम

हे शिक्षक!
मैं जानता हूं और मानता हूं
कि न तो हर आदमी सही होता है
और न ही होता है सच्चाय
किंतु तुम्हें सिखाना होगा कि
कौन बुरा है और कौन अच्छा
दुष्ट व्यक्तियों के साथ-साथ आदर्श प्रणेता भी होते हैं,
स्वार्थी राजनीतिज्ञों के साथ-साथ समर्पित नेता भी होते हैं
दुश्मनों के साथ-साथ मित्र भी होते हैं
हर विरूपता के साथ सुंदर चित्र भी होते हैं
समय भले ही लग जाए, पर
यदि सिखा सको तो उसे सिखाना
कि पाए हुए पांच से अधिक मूल्यवान है-
स्वयं एक कमाना
पाई हुई हार को कैसे झेले, उसे यह भी सिखाना
और साथ ही सिखाना, जीत की खुशियां मनाना।
यदि हो सके तो उसे ईर्ष्या या द्वेष से परे हटाना
और जीवन में छुपी मौन मुस्कान का पाठ पढ़ाना।
जितनी जल्दी हो सके उसे जानने देना
कि दूसरों को आतंकित करने वाला स्वयं कमजोर होता है,
वह भयभीत व चिंतित है
क्योंकि उसके मन में स्वयं चोर होता है।
उसे दिखा सको तो दिखाना
किताबों में छिपा खजाना।
और उसे वक्त देना चिंता करने के लिए
कि आकाश के परे उड़ते पंछियों का आह्लाद
सूर्य के प्रकाश में मधुमक्खियों का निनाद
हरी-भरी पहाड़ियों से झांकते फूलों का संवाद
कितना विलक्षण होता है अविस्मरणीय, अगाध
उसे यह भी सिखाना
धोके से सफलता पाने से असफल होना सम्माननीय है
और अपने विचारों पर भरोसा रखना अधिक विश्वसनीय है
चाहें अन्य सभी उनको गलत ठहराएं
परंतु स्वयं पर अपनी आस्था बनी रहे, यह विचारणीय है।
उसे यह भी सिखाना कि वह सदय का साथ सदय हो
किंतु कठोर के साथ हो कठोर।
और लकीर का फकीर बनकर
उस भीड़ के पीछे न भागे जो करती हो निरर्थक शोर।
उसे सिखाना
कि वह सबकी सुनते हुए अपने मन की भी सुन सके,
हर तथ्य को सत्य की कसौटी पर कसकर गुन सके।
यदि सिखा सको तो सिखाना कि वह दुख में भी मुस्कुरा सके,
घनी वेदना से आहत हो, पर खुशी के गीत गा सके।
उसे यह भी सिखाना कि आंसू बहते हों तो उन्हें बहने दे,
इसमें कोई शर्म नहीं, कोई कुछ भी कहता हो, कहने दे।
उसे सिखाना -
कि वह सनकियों को कनखियों से हंसकर टाल सके
पर अत्यंत मृदुभाषी से बचने का खयाल रखे।
वह अपने बाहुबल व बुद्धिबल का अधिकतम मोल पहचान पाए,
परंतु अपने हृदय व आत्मा की बोली न लगवाए।
वह भीड़ के शोर में भी अपने कान बंद कर सके
और स्वत: की अंतरात्मा की सही आवाज सुन सके।
सच के लिए लड़ सके और सच के लिए अड़ सके।
उसे सहानुभूति से समझाना,
पर प्यार के अतिरेक से मत बहलाना।
क्योंकि तप-तप कर ही लोहा खरा बनता है,
ताप पाकर ही सोना निखरता है।
उसे साहस देना ताकि वक्त पड़ने पर अधीर बने
सहनशील बनाना ताकि वह वीर बने।
उसे सिखाना कि वह स्वयं पर असीम विश्वास करे,
ताकि समस्त मानव जाति पर भरोसा व आस धरे।
यह एक बड़ा सा लंबा-चौड़ा अनुरोध है,
पर तुम कर सकते हो, क्या इसका तुम्हें बोध है?
मेरे और तुम्हारे, दोनों के साथ उसका रिश्ता है
सच मानो, मेरा बेटा एक प्यारा-सा नन्हा सा फरिश्ता है।

कविता

वीर रस

युद्ध नहीं जिनके जीवन में, वे भी बहुत अभागे होंगे
या तो प्रण को तोड़ा होगा, या फिर रण से भागे होंगे,

दीपक का कुछ अर्थ नहीं है, जब तक तम से नहीं लड़ेगा,
दिनकर नहीं प्रभा बाँटेगा, जब तक स्वयं नहीं धधकेगा,

कभी दहकती ज्वाला के बिन, कुंदन भला बना है सोना
बिना घिसे मेहंदी ने बोलो, कब पाया है रंग सलौना

जीवन के पथ के राही को, क्षण भर भी विश्राम नहीं है
कौन भला स्वीकार करेगा, जीवन एक संग्राम नहीं है,

अपना अपना युद्ध सभी को हर युग में लड़ना पड़ता है,
और समय के शिलालेख पर, खुद को खुद गढ़ना पड़ता है,

सच की खातिर हरिश्चंद्र को, सकुटुम्ब बिक जाना पड़ता
और स्वयं काशी में जाकर, अपना मोल लगाना पड़ता,

दासी बनकरके भरती है, पानी पटरानी पनघट में
और खड़ा सम्राट वचन के कारण काशी के मरघट में

ये अनवरत लड़ा जाता है, होता युद्ध विराम नहीं है
कौन भला स्वीकार करेगा, जीवन एक संग्राम नहीं है

हर रिश्ते की कुछ कीमत है, जिसका मोल चुकाना पड़ता
और प्राण पण से जीवन का हर अनुबंध निभाना पड़ता

सच ने मार्ग त्याग का देखा, झूठ रहा सुख का अभिलाषी
दशरथ मिटे वचन की खातिर, राम जिये होकर वनवासी

पावक पथ से गुजरीं सीता, रहीं समय की ऐसी इच्छा
देनी पड़ी नियति के कारण, सीता को भी अग्नि परीक्षा

वन को गईं पुन: वैदेही, निरपराध ही सुनो अकारण
जीतीं रहीं उम्रभर बनकर, त्याग और संघर्ष उदाहरण

लिए गर्भ में निज पुत्रों को, वने का कष्ट स्वयं ही झेला
खुद के बल पर लड़ा सिया ने, जीवन का संग्राम अकेला

धनुष तोड़ कर जो लाए थे, अब वो संग में राम नहीं है
कौन भला स्वीकार करेगा, जीवन एक संग्राम नहीं है

तीर्थराज अमृत महाकुंभ

— डॉ0 हरिप्रसाद दुबे

तीर्थराज की त्रिवेणी का संगम गंगा, यमुना में सरस्वती का ज्ञान समाहित है। विश्व विख्यात देवताओं की तरह जीवन जीने की परंपरा है। मां को स्वर्ग से श्रेष्ठ माना गया है। आदिशक्ति की माता परम गंगा की वन्दना संसार करता आरहा है महाकुंभ प्रयागराज की आराधना की महान परंपरा सार्वभौमिक है। जनसमुद्र का पुण्यदर्शन पाने के लिए जीवन धन्यतम है। अमृतमंत्र वाणी आकाशवाणी कुंभवाणी की ऊंचाई का दिव्य शिखर है। कुंभ गीतों का संगीत कला–संस्कृति अतुलनीय असाधारण है। विश्वास भक्ति आनन्द का तीर्थराज सभी नदियों में अग्रगण्य हैवंदनीय भी।

महाकुंभ ऐतिहासिक संदर्भों का प्रसंग वंदनीय विनम्रता और आदर से सम्मिलत है। कुंभ की प्रेरणा जीवन की किरण के लिए सन्देश देने वाली है। गंगा के लोकजीवन में आस्था प्रतीकों, पूजा अभिप्रायों अर्थात गंगा आरती, गंगागीत, दीपदान, विवाहो परान्त, कंकण मोक्ष जन विश्वास की परंपरा है। भावनात्मक विचार–गंगा का जीवन भाव दिखाई पड़ता है। हिमालय से समुद्र को जोड़ने वाली भागीरथी जलप्रवाह है। गंगा विचार और संस्कृति का नवनीत भाव का विश्वास विराट, भव्य और दिव्य है। गौरव की पवित्रता, विशालता सर्वाधिक पूज्यनीय वंदनीय प्रणाम करती है। कुंभ संदर्भ ओतप्रोत है। भारतीय संस्कृति में पूजा, मंगल, विवाह दीपार्चन जैसी आस्थाओं में ब्रह्मलोक से शिवलोक तक कमंडल से जटा तक सुरसरि के रूप में आराधना है। अनेक ऋषियों से गंगा का सम्बन्ध है। सभीतीर्थ उद्भव से लेकर समर्पण तक अपनी दिशाएं और धारा बदलती हैं। आयुर्वेद में सबसे बड़ी जलौषधि है। वरुण जल देवता और जल पूजा से अधिक वन्दना की जाती है। गंगा पतित पावनी है। पतित रहने पर गंगा की रक्षा होती है। अमृत महाकुंभा में त्रिवेणी प्रयागराज में हर्षवर्धन ने दान शीलता का अलग ढंग से मंत्रमुग्ध करता है।

देवत्व वन्दना गंगा, परम्परा धन्य बनाया।
त्रिवेणी का रूप निखारा, पावन लोकरचाया ॥
गंग ने सुन्दर यहीं, सुर से सुर और मिलाया।
त्रिभुवन हार सिंगार, भगवती कस्तूरी महक छाया ॥
गंगा की स्तुति हनुमान, ने मंत्र दिव्य का आया ।
गंगाष्टक की महिमा गंगा, शंकराचार्य ने लाया।
मन चंगा कठौती में गंगा, रैदास की बानी भाया ॥
अद्‌भुत सुगन्ध केशवदास, की सुरपुरकी पाया ।
पतित पावनी गंगा, हिमालय का समुद्र जोड़ाया ॥
लोकजीवन आस्था प्रतीक, पूजा दीपदान दिखाया।
गंगा विचार संस्कृति, विश्वास मंगल हरषाया ॥
ऋषियों से सम्बन्ध, यशस्वी तीर्थ का गाया ।
कुंभ प्रयाग दर्शन सरस्वती, गंगा अमृत धारा ।
गंगा यमुना दिव्य-मंत्र, कल्पवृक्ष शान्ति न्यारा ॥
देवनदी भागीरथी ऋद्धि-सिद्धि जीवन रस प्यारा
पुण्य दर्शन सौन्दर्य, श्रृंगार प्रसाद तुम्हारा।
मंदाकिनी पावन संगम, रची अलोकिक हमारा।
तीर्थराज देखते बनती झूसी प्रिय गणेश सारा
पंडितराज जगन्नाथ गंगालहरी पद्‌माकर ने पाया
गंगा महिमा गान तुलसी ने प्रार्थना तपका भाया
ऋग्वेद पुराणों में शुभदा शतपथ आरण्यक मिलती
सूर रहीम रसखान मीरा तानसेन विद्यापति जुलती
हर-हर गंगे मानसी गंगा भारतेन्दु मतिराम ।
पंत, निराला, रत्नाकर चन्दन भक्ति गंगा नाम ॥

पर्यन्त संस्कृत के विख्यात कवियों ने किसी न किसी रूप में गंगा का माहात्म्य का अलोकिक वर्णन किया है। पंडितराज जगन्नाथ की गंगा लहरी धर्मप्राण गूंज रही हैं। भगवान शंकराचार्य और वल्लभाचार्य ने गंगा की वन्दना अभिभूत किया। रहीम रसखान से भी गंगा महिमा गाए बिना नहीं रहा गया है कविवर पदमाकर की गंगालहरी और सुकवि जगन्नाथरत्नाकर का गंगावतरण हृदय की मणि तथा साहित्य लालित्यपूर्ण है। परम पावनी भागीरथी का लोकमंगलकारी आशीर्वाद दिव्य है। गंगा मां की कृपा ने भाषा भाव का तीर्थराज रचाया। ऋषीकेश के आगे पर्वतों में गंगा के मार्ग का पुण्य दर्शन किया गया। गंगा की परम धारा युग-युगों से शाश्वत, निर्मल अविरल कल-कल प्रवाहित हो स्रोतस्विनी कल-कल निनादिनी ब्रह्म स्वरुपा गंगा ने भारत को धर्म, संस्कृति, तीर्थ की दृष्टि प्रदान की यही सृष्टि मंगलदिव्य है।

तीर्थराज प्रयाग की सरस्वती की अभीष्ट सिद्धिख्यातिअसीम है। इसी तरह मनोरमा, सुरेण, अधिवती और विमलोदका नामों से सरस्वती उत्तर कोसल, कुरु क्षेत्र, पुण्यमय, हिमालय पर्वत आदि स्थलो पर प्राणियों को पावन करने के लिए नदी रूप में प्रवाहित हुई। विद्या प्रदान करती मंगल पर्व है। ज्ञान रक्षा करती आरही है। सरस्वती जिनका मुख पूर्णिमा के चंद्रतुल्यगौर है, जिनकी अंग कांति कर्पूर और फूल के समान, जिनका मस्तस्क अर्धचन्द्र से अलंकृत हैजो अपने हाथों में वीणा, अक्षसूत्र, अमृत पूर्ण कलश और पुस्तक धारण करती हैं एवं ऊंचे स्तनों वाली हैं जिनका शरीर दिव्य आभूषणों से विभूषित हैं। और जो हँस पर आरुढ़ हैं उन सरस्वती देवी का मैं आदर पूर्वक ध्यान करता हूँ। सरस्वती की अमृतवाणी कुंभ में आकाशवाणी आंखों देखा हाल सुनाने के लिए आवाश्यक मंत्र श्लोक मंत्रमुग्ध करता है। आराधना में कुंभगीतों की सृष्टि संस्कार परंपरासे पूर्ण है। महाकुंभ का अमृत तीर्थराज मंगलध्वनि का मंत्र ही जीवन्त मंत्रमुग्ध करके मील का पत्थरही ऐतिहासिक है।

अमृत कुभ ऋग्वदें के मंत्रों में गंगा, यमुना तना सरस्वती का आदिम उल्लेख पाते हैं। पौराणिक युग में गंगा पवित्र गरिमामयी है। सरस्वती की ज्ञान रक्षा करती है। विद्या तीर्थराज का ताप मंत्र है। भगवती गंगा के सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्ष को विशेष रूप से प्रतिष्ठित हैं। गंगा पवित्रतम सलिला में पावनी-शक्ति का आगार है। भगवान विष्णु ब्रहमद्रव से निकलने से गंगा की विष्णुपदी और कमंडल में ब्रहमा द्वारा आरक्षित किए जाने से ब्रहम कमंडलवासिनी तथा शिव की जटा में अभिरक्षित होने से शिव सिर मालती भाल नामों से प्रसिद्ध हुई। इन्हें त्रिपथगा कहते हैं। आकाश गामिनी मंदाकिनी कही जाती है। पातालगामिनी की अवस्था में भोगवती और भगीरथ के

तप से लायी जाने के कारण भागीरथी संज्ञा से प्रसिद्ध हुई। गंगोत्री नगराज हिमालय का एक शिखर है। वहाँ से उद्‌गम होने से गंगा की हिमालय कन्या कहते हैं। महर्षि जान्हवी ने गोद में रोप लिया इससे मैदान में उतरने के पहली जाहनवी कहलाई। सुरलोक में पैदा होने से इन्हें सुरपगा कहा जाता है। पुराणों में अनेक स्थलों पर गंगा को सुरसरि कहा गया है। महाकुंभ की वृन्दना महिमा है

गौरि–गणेश की पूजा मुहूर्त परम शगुन मंगल मंत्रों में की जाती है। भारत में उत्तर दक्षिण और प्राची–प्रतीची में विवाह और गीदान में एक संकल्प पढ़े जाते हैं। गंगा का जल परम पावन है। कलिग्रास में मोक्ष की उपलब्धि होती है। तीर्थराज करोड़ नर–नारी एकत्र होकर अपने आगामी जन्म को सुधारने का प्रयास करते हैं। युग में प्रयागराज का एक अंश दान शीलता का जन समुद्र है। प्रयाग साहित्य कारों की पीठस्थली है। युग प्रवर्तक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, कविवर सुमित्रा नन्दन पन्त, श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी और महादेवी वर्मा की कूर्म भूमि है जहां भावों के मंगली करण है। गंगा महिमा वर्णन की परम्परा है।

अमृत महाकुंभ में सरस्वती और यमुना के साथ गंगा की महानता निहारती है। निश्छल गंगा मंगलकारी हैं। ऋग्वेद में संदर्भ गंगा की व्याख्या है। तैत्तिरीय आरण्यक जैमिनी ब्राहमण और शतपथ ब्राह्मण में भागीरथी विविध वर्णित हैं। गंगा की महिमा साहित्य ग्रंथ और कुंभों के प्रसंग संदर्भित मिलते हैं। पुराणों में गंगा एक दूसरे से मिलती जुलती सम्बंध में आती है। ऋग्वेद के दशम स्कंध में गंगा की गरिमा यही है–

इमं में गंगे यमुने सरस्वति
शुतुद्रि स्तोमं सचता पुरुष्ण्या ।
असिकन्या मरुदवधे वितस्तया र्जीकीये
श्रृणद्‌मा सुषो मया ।। – ऋग्वेद 10.75.5

अर्थात हे गंगा यमुना, सरस्वती, शुतुद्री (सतल. पुरुष्णी (रावी) असिक्नी (चिनाव) के बाद मरुद वृधा (चिनाव और झेलम के बीच की या चिनाव की पश्चिम दिशा बाली मरुवर्दवन नाम की (सहायक नदी), वितस्ता (झेलम) सुषोमा (सौहान) और आर्जीकीया (व्यास) तुम वंदनीय हो ।

जगदगुरु श्री आदि शंकराचार्य अमृत पुत्र एक हैं जिन्होंने शाश्वत जीवन के महान सत्य का सौभाग्य प्राप्त किया। शंकरा चार्य ने गंगाष्टक में गंगा की महिमा का गान किया है–

निधानं धर्माणां किमपि च विधानं नवमुदाम,
प्रधानं तीर्थानाम मल परिधानं त्रिजगतः ।
समाधानं बुद्धेरथ खलु तिरोधान मधियाम्,
त्रियामाधानं नः परिहरतु तापं तव वपुः ।।

अर्थात हे। माता ! तुम्हारा यह जलमय शरीर जो कि धर्मों का खजाना है, मुमुक्षजनों की नैतिक क्रिया है और बुद्धि मानों की बुद्धि का समाधान (पात्र) और कुबुद्धियों का तिरोधान (आच्छादन) एवं लक्ष्मी का आश्रय है – वह मेरे संतापों को दूर करे।

माता–पिता का संस्कार सन्तान की महानता बचाती है महाकुंभ की विजय दिव्य किरन सरस्वती का आनन्द है।

गणतंत्र दिवस

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने संविधान का मसौदा तैयार का नेतृत्व किया और यह दिन भारत संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। गणतंत्र दिवस स्वतंत्र भारत की भावना को स्मरण कराता है। इसी दिन 1930 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में औपनिदेशिक शासन से पूर्ण स्व राज्य की घोषणा की गई।

गणतंत्र भारत की राष्ट्रीय आवश्यकता है जो भारत के संविधान अपनाने और देश के गणतंत्र परिवर्तन की याद में मनाया जाता है। 26 जनवरी 1950 को लागू हआ था। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 21तोपों की सलामी के साथ ध्वाजारोहण कर भारत को पूर्ण गणतंत्र किया। इस ऐतीहासिक क्षणों का स्मरण कराने के लिए प्रति वर्ष यह राष्ट्रीय पर्व मानते है।

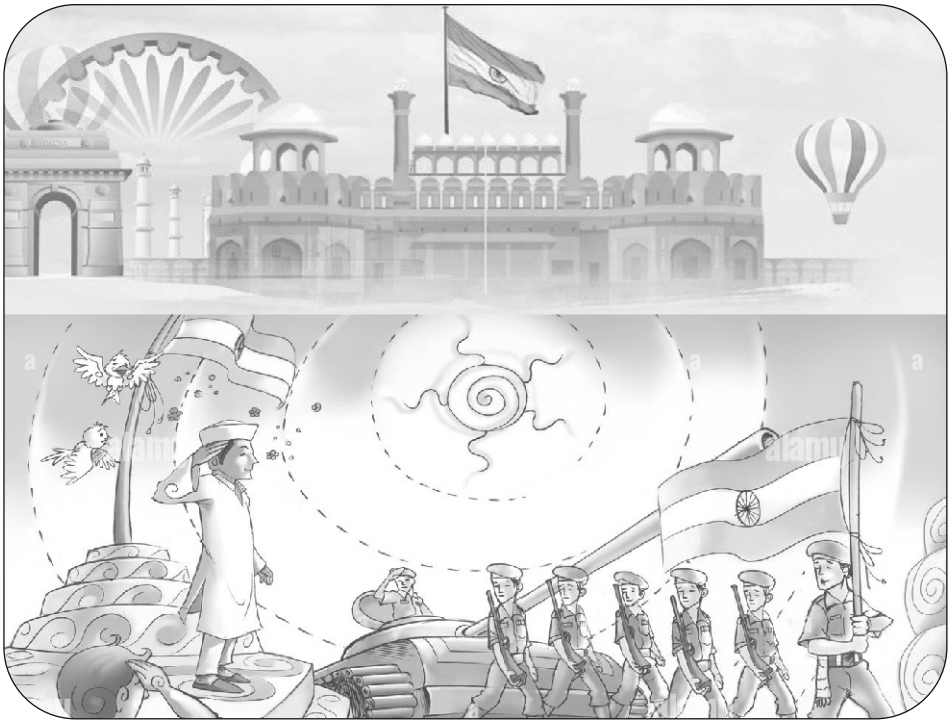

विद्या भारती में समपर्ण क्यों ?

विद्या भारती प्रति वर्ष विद्यालयों में समपर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, इसमें भैया–बहिन, अचार्य बन्धु, पूर्व छात्र, समिति के अधिकारी एवं अभिभावक व समाज के बन्धु सहभाग करते है यह कार्यक्रम मकर सक्रान्ति से बसन्त पंचमी के मध्य होना है।

स्वामी विवेकान्द जी ने कहा था समाज के दीन–हीन लोगों के प्रति हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है, उन्हें शिक्षा देना और यह बताना कि प्रयत्न करने पर तुम उन्नति कर सकते हो, हमारा राष्ट्र जो झोपड़ियों में निवास करता है, वह अपना पौरुष खो बैठा है और व्यक्तित्व भूल चुका है, हमें उन्हें खोया हुआ व्यक्तित्व फिर से प्रदान कराना है।

हमारा आदर्श –त्याग और सेवा विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेष में नेपाल की सीमा से बने दुर्गम सेवा, ग्रामों एवं नगरों की सेवा बस्तियों में निःशुल्क विद्यालय, एकल शिक्षक विद्यालय संस्था केन्द्र बड़ी संख्या में संचालित है। इस कार्य को संचालित करने के लिए संसाधनों की आवश्यकता रहती है।

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार–''नर सेवा नारायण सेवा'' की पुनीत भावना से बाल–गोपाल की पूजा–भाव से अपना और परिवार जनों से इस पुनीत कार्य में समाज और राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ में अपना खुले मन से संस्थान में जाकर सहयोग करें।

अपना सममर्थ राष्ट्र निर्माण के दुर्गम क्षेत्र पूर्वोत्तर राज्य (असम, त्रिपुरा, नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय अरुणाचल) लेहलदाख, जम्मू–कश्मीर में लगे अनेकों कार्यकर्ताओं के सहयोग में आपका योगदान रहेगा।

आप इस प्रकार सहयोग कर सकते हैं –

1. एकल विद्यालय चलाने पर – 51000/–
2. एक संस्कार केन्द्र पर – 21000/–
3. कापी किताबों पर एक छात्रहेतु –1500/–
4. एकल के एक छात्र परव्यय – 51000/–

हमारा राष्ट्र ध्वज

झण्डा ऊँचा रहे हमारा
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

सदा शक्ति बरसाने वाला
प्रेम सुधा बरसाने वाला
वीरों को हर्षाने वाला
मातृभूमि का तन मन सारा
मातृभूमि का तन मन सारा

झण्डा ऊँचा रहे हमारा
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

आओ प्यारे वीरों आओ
देश धर्म पर बलि–बलि जाओ
एक साथ सब मिल कर गाओ
प्यारा भारत देश हमारा
प्यारा भारत देश

झण्डा ऊँचा रहे हमारा
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

इसकी शान न जाने पाए
चाहे जान भले ही जाए
विश्व विजयी कर के दिखलाएं
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा
तब होवे प्रणपूर्ण हमारा

झण्डा ऊँचा रहे हमारा
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

इस झंडे के नीचे निर्भय
ले स्वराज यह अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय
स्वतंत्रता है ध्येय हमारा
स्वतंत्रता है ध्येय हमारा

झण्डा ऊँचा रहे हमारा
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

भारत की झाँकी

आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झाँकी हिंदुस्तान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये है बलिदान की
वंदे मातरम, वंदे मातरम
उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है
जमुना जी के तट को देखों गंगा का ये घाट है
बाट–बाट में हाट–हाट में यहाँ निराला ठाठ है
देखो ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती हैं बलिदान की
वंदे मातरम, वंदे मातरम

ये हैं अपना राजपूताना नाज इसे तलवारों पे
इसने सारा जीवन काटा बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला हैं आजादी के नारों पे
कूद पड़ी थी यहाँ हजारों पद्मिनियों अंगारों पे
बोल रही है कण कण से कुरबानी राजस्थान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम, वंदे मातरम

देखो मुल्क मराठों का यह यहाँ शिवाजी डोला था
मुगलों की ताकत को जिसने तलवारों पे तोला था
हर पर्वत पे आग जली थी हर पत्थर एक शोला था
बोली हर–हर महादेव की बच्चा–बच्चा बोला था

शेर शिवाजी ने रखी थी लाज हमारी शान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की वंदे मातरम, वंदे मातरम

जलियाँवाला बाग ये देखो यही चली थी गोलियाँ
ये मत पूछो किसने खेली यहाँ खून की होलियाँ
एक तरफ बंदूकें दन दन एक तरफ थी टोलियाँ
मरनेवाले बोल रहे थे इन्कलाब की बोलियाँ
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाजी अपनी जान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की वंदे मातरम, वंदे मातरम
ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है यहाँ का बच्चा–बच्चा अपने देश पे मरनेवाला है ढाला है इसको बिजली ने भूचालों ने पाला है मुट्ठी में तूफान बंधा है और प्राण में ज्वाला है जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान की इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की वंदे मातरम, वंदे मातरम

वीर बालक पृथ्वी सिंह

भारत भूमि को वीर पुत्रों की भूमि कहते है, यहाँ सैकड़ो वीर पुरूष समय– समय पैदा हुए। इन्होंने अपनी वीरता से इतिहास में अमर हो गए। जब– जब वीरता का नाम आता है, तो राजस्थान प्रान्त का नाम सबसे पहले सूची में आता है। इसी भूमि में जन्में वीर बालक पृथ्वी सिंह का नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है।

औरंगजेब के शासन काल में जंगल से एक शिकारी खूंनखार शेर पकड़कर लाया गया। शेर बड़ा ही भयांकर था। दहाड़ता तो लोगों के दिल दहल जाते थे। एक मजबूत पिजरे में रखा गया था। शेर के बारे में औरंगजेब के दरबारी बड़ी प्रसंशा कर रहे थे। पर जोधपुर के राजा यशवन्त सिंह ने औरंगजेब की बात पर असहमति जताई और बोले इससे भी शक्तिशाली शेर तो हमारे पास है। इतनी बात सुनते ही मुगल बादशाह औरंगजेब नाराज हो गया। उसने यशवन्त सिंह से कहा यदि शक्तिशास्त्र शेर है, तो मेरे शेर से मुकाबला कराओ। यदि शेर हार गया तो तुम्हारा सिर काट दिया जाएगा। महाराजा यशवन्त सिंह ने औरंगजेब की शर्त को सहर्ष स्वीकार कर ली।

अगले दिन किले में शेरों की लड़ाई का आयोजन किया गया, जिसे देखने के लिए नगर की भारी भीड़ इकट्ठी हो गई औरंगजेब अपने आसन पर आसीन हुआ। महाराजा यशवन्त सिंह अपने आसन पर बारह वर्षीय पुत्र के साथ बैठे हुए थे। औरंगजेब ने बड़े गुस्से से बोला कहाँ है तुम्हारा शेर उन्होंने कहा आप निश्चित रहो वह यहीं उपस्थित है। लड़ाई शुरू कराओं। औरंगजेब ने लड़ाई की घोषणा कर दी। शेर को पिंजड़े से छोड़ दिया गया उसी समय यशवन्त सिंह अपने पुत्र पृथ्वी सिंह को आदेश दिया। आप शेर के पिंजरे में आओ और शेर से युद्ध करो।

पिताजी की आज्ञा सिरोधार्य कर अपने पिता जी को प्रणाम करके शेर के पिजरे में घुस गया। शेर ने पृथ्वी सिंह की ओर देखा, उस तेजस्वी बालक की आँखों में देखते हुए शेर पूँछ दबाकर पीछे हट गया। यह देखकर सभी दर्शक हैरान हो गये। तभी मुगल सैनिको ने भाले से उकसाया तब शेर पृथ्वी सिंह की ओर बढ़ा। शेर को आते देख पृथ्वी सिंह थोड़ा हट उसी छड़ उसने अपनी म्यान से तलवार निकाल ली। महाराजा यशवन्त सिंह जोर से चिल्लाये ? बेटा तू क्या कर रहा है? शेर के पास तलवार तो है नहीं फिर क्या तलवार चलाएगा यह धर्म युद्ध नहीं है।

पिताजी की यह बात सुनते ही बालक पृथ्वी सिंह ने तलवार फेंक दी, और शेर पर टूट पड़ा काफी संघर्ष के बाद उस वीर बालक ने शेर का जबड़ा अपने हाथों से फाड़कर उसके शरीर के टुकड़े कर फेंक दिया। लोग पृथ्वी सिंह की जय–जयकार करने लगे। शेर के खून से सना बालक पिंजडे से बाहर निकला, तो राजा यशवन्त सिंह अपने हृदय से लगा लिया। दुष्ट और पापी मुगल शासक ने यह देखकर योजना बनायी उपहार स्वरूप जहर से सना वस्त्र उसे पहना दिया। उसे पहनते ही पृथ्वी सिंह की मृत्यु हो गयी। ऐसा साहसी और पराक्रमी बालक पृथ्वी सिंह को नमन करते हैं।

गतिविधियाँ

सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज रायबरेली

यातायात सुरक्षा अभियान के तहत आज दिनांक 7.11.2024 दिन गुरुवार को विद्यालय सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज रायबरेली में यातायात उप निरीक्षक श्री भरत राज सिंह एवम् रमेश सिंह जी का आगमन हुआ और बच्चों के बीच यातायात के नियमों के बारे में जानकारी दी तथा जागरूक किया। विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री जामवंत राय जी ने आए हुए यातायात अधिकारियों का स्वागत किया एवं प्रधानाचार्या श्रीमती निधि द्विवेदी जी ने अतिथियों का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर समस्त विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहा।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर विशेषांक का विमोचन

विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र की तीन दिवसीय क्षेत्रीय कार्यकारिणी (कार्य योजना) बैठक शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर पक्की बाग गोरखपुर में प्रारंभ हुई। उद्घाटन सत्र में लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की त्रिशताब्दी जयंती को समर्पित शिशु मंदिर संदेश विशेषांक का विमोचन प्रधान सम्पादक उमाशंकर मिश्र द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघ चालक डा. महेंद्र अग्रवाल द्वारा किया गया उन्होंने कहा पत्रिकाओं के माध्यम से समाज को जगाने का कार्य कर रहा है। इसमें सबसे बड़ा योगदान विद्या भारती का है, जिसका सीधा संपर्क बच्चों एवं उनके अभिभावकों से होता है। महापौर डा. मंगलेश श्रीवास्तव ने कहा संघ परिवार का दायित्व और बढ़ जाता है जब समाज में कोई परिवर्तन लाना होता है। क्षेत्रीय मंत्री डा. सौरव मालवीय ने भी बैठक को संबोधित किया। इस दौरान विद्या भारती के पूर्वी उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष डॉ0 दिव्य कान्त शुक्ल एवं क्षेत्रीय संगठन मंत्री मा0 हेमचन्द्र जी ने इस पत्रिका के निर्माण में अहम भूमिका निभायी। भारतीय शिक्षा परिषद सचिव एवं पत्रिका सम्पादक मण्डल के प्रतिनिधि श्री दिनेश कुमार सिंह ने संचालन किया। सह क्षेत्रीय संगठन मंत्री डॉ. राम मनोहर कानपुर प्रान्त संगठन मंत्री श्री रजनीश पाठक सभी प्रदेश निरीक्षक बन्धु उपस्थित रहे।

मातृ भारती योजना के अर्न्तत व्याख्यान माला का आयोजन

आज दिनांक 06.11.2024, दिन बुधवार को विद्यालय सनातन धर्म सरस्वती विद्या मन्दिर बालिका इंटर कॉलेज, मिश्राना, लखीमपुर खीरी में मातृ भारती योजना के अन्तर्गत व्याख्यान माला सप्ताह का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मातृ भारती की अध्यक्ष श्रीमती प्रीति दीक्षित जी एवं विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वन्दना से हुआ।

विद्यालय की मातृ भारती की सदस्य श्रीमती प्रीती गुप्ता जी ने व्याख्यान माला सप्ताह के प्रथम दिवस पर 'स्वच्छता' विषय पर विस्तृत रूप से चर्चा की। उन्होंने कहा कि स्वच्छता से स्वास्थ्य और सफलता की दिशा में पहला कदम बढ़ता है। अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखें, जैसे कि घर, स्कूल और समुदाय। नियमित रूप से हाथ धोएं, विशेषकर खाने से पहले और शौचालय जाने के बाद। कूड़ा–कचरा सही स्थान पर फेंकें, जैसे कि कूड़ेदान में। पानी का सही उपयोग करें और बर्बादी रोकें।

स्वच्छता के लिए जिम्मेदारी लें और दूसरों को भी प्रेरित करें। स्वच्छता अभियान में भाग लें और अपने समुदाय को स्वच्छ बनाने में मदद करें। स्वच्छता के महत्व को समझें और इसके लिए काम करें। अपने स्कूल और घर में स्वच्छता के नियम बनाएं और उनका पालन करें। अपना सभी सामान व्यवस्थित रखें। स्वच्छता के महत्व को समझने और इसके लिए काम करने से हम अपने जीवन को स्वस्थ और सफल बना सकते हैं।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी ने आयी हुई मातृ भारती की सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

महर्षि वाल्मीकि जयन्ती समारोह

शारीरिक चोट की पीड़ा दर्द, व्यथा की औषधियां चिकित्सा विज्ञान ने आधुनिकतम खोज कर उपचार का पूरा प्रयास कर रहा है परन्तु मन की व्यथा– पीड़ा की कोई औषधि नहीं हैं हृदय की पीड़ा से पीड़ित मन पंचतत्वों से निर्मित जगत में सृजनात्मक अनुकरणीय संसाधनो कार्यो में अनिवार्य रूप से समर्पित हो जाता है। जब मन हृदय चित्त परमात्मा में समर्पित हो जाती है तब चेतन व अवचेतन मन में परमात्मा के ही स्वरूप का दर्शन होता है। मानव सेवा ईश्वर की आराधना भक्ति का साक्षात दर्शन कराता है। महर्षि वाल्मीकि का जन्मोत्सव हम सब के लिये एक सबल प्रमाण प्रस्तुत करता है। संस्कृत भाषा में मानवी सद्गुण विकास का अविस्मरणीय व पूज्य ग्रन्थ रामायण महर्षि वाल्मीकि का अद्वितीय ग्रन्थ है। त्यौदह कलाओं को अपने जीवन के क्षण–क्षण में अनुपालन करने वा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामबन्द्र की भार्या व तनयद्वय को अपने आश्रम में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक सर्वसद्गुण विकास करने वाले महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन से हम सबको प्रेरणा लेनी ही चाहिये। विद्याभारती विद्यालय सरस्वती शिशु मन्दिर अकबरपुर सीतापुर में आयोजित समारोह में विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री सुरेश विश्वकर्मा जी ने कहा कि जयती, पर्व, उत्सव हमको अविस्मरणीय ज्ञान प्रदान कर उसको अपने जीवन में सदा अनुपालन की सीख देते हैं। कार्यक्रम का संचालन श्री विनोद कुमार जी ने किया। सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वचलन माल्यार्पण विद्यालय प्रबंध समिति के महानुभावों ने किया। कमलनयन ने अपने उद्बोधन में कहा कि रामायण हम सबकी शिक्षा – ज्ञान का चिर स्तम्भ है। कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह विद्यार्थीसमूह का आभार ज्ञापित किया प्रधानाचार्य जी ने।

सर्वे भवन्तु सुखिन ..... मंगल मंत्र से कार्यक्रम का समापन हुआ।

।। भारत माता की जय।।

जिसने बदली सुभाष चन्द्र बोस की जिन्दगी

सुभाष को कॉलेज से ही नहीं बल्कि यूनिवर्सिटी से भी निकाल दिया गया. वो वापस गृह जनपद कटक लौट गए. उनके माता–पिता ने उन्हें कुछ नहीं कहा. भाइयों की सहानुभूति उनके साथ थी, क्योंकि हर कोई मान रहा था कि उन हालात में सुभाष ने जो कुछ किया, वह सही था. वो हीरो बन चुके थे. जहां जाते वहां छात्र उनका स्वागत और सम्मान करते।

करीब एक साल तक सुभाष ने किताबें किनारे रख दीं. जी–जान से समाजसेवा में जुट गए. वो अपने दल के साथ गांव में जाते. हैजा व चेचक जैसी बीमारियों का इलाज कर रहे डॉक्टरों का हाथ बंटाते. गांववालों के लिए दवाई की व्यवस्था करते. उन्हीं दिनों उन्होंने धार्मिक उत्सवों के जरिए युवाओं में सामुदायिकता की भावना जगाने का काम शुरू किया।

से वो घटना है, जिसने असल में सुभाष चंद्र बोस के जीवन को ही नहीं बल्कि उनकी पूरी सोच को बदल कर रख दिया था। इसके बाद ही वो क्रांतिकारी बनने के रास्ते पर चल पड़े थे। सुभाष ने जब कोलकाता के प्रसिद्ध प्रेसीडेंसी कॉलेज में एडमिशन लिया, वो जबरदस्त मेघावी छात्र थे। हमेशा पढाई में डूबे रहते थे, लेकिन इसी बीच एक घटना ऐसी हुई, जिसने उनके जीवन की दिशा तय कर दी।

वह उस दिन कॉलेज की लाइब्रेरी में थे तभी पता चला कि एक अंग्रेज प्रोफेसर ने खीझ में उनके कुछ साथियों को जोर से धक्का दिया है. चूंकि सुभाष ही क्लास के रिजेंटेटिव थे। लिहाजा तुरंत प्रिंसिपल के पास पहुंचे. इस बात की जानकारी दी अंग्रेज प्रोफेसर का रवैया चूंकि बहुत खराब था, इसलिए सुभाष चाहते थे कि वो प्रोफेसर माफी मांगें प्रिंसिपल ने खारिज कर दिया।

अगले दिन से छात्र हड़ताल पर चले गए. पूरे शहर में जब ये खबर फैली तो हड़ताल को समर्थन भी मिलने लगा. आखिरकार प्रोफेसर को झुकना पड़ा। दोनों पक्षों के बीच एक सम्मानजनक समझौता हो गया. कुछ ही दिनों बाद जब उसी अंग्रेज प्रोफेसर ने फिर यही हरकत की तो छात्रों ने कानून को हाथ में लेते हुए बल प्रयोग किया. एक जांच समिति बनी, जिसमें सुभाष ने तर्कों के साथ छात्रों का पक्ष रखा. उनकी कार्रवाई को परिस्थितिवश सही ठहराया. जिस पर कॉलेज के प्रिंसिपल ने उन्हें कुछ छात्रों के साथ काली सूची में डाल दिया।

इस घटना ने सुभाष को अहसास कराया कि अंग्रेज भारतीय के साथ कितना खराब व्यवहार कर रहे हैं. इस घटना के बाद अंग्रेजों को लेकर सुभाष के मन में जो गुस्सा भरा, उसने उन्हें क्रांतिकारी बना दिया. उनके दिलोदिमाग में लगातार ये भावना बढ़ती रही कि किसी भी तरह से अंग्रेजों को इस देश से बाहर किया जाना चाहिए।

करीब एक साल बाद वो फिर कोलकाता वापस लौटे. उन्हें उम्मीद थी कि कोलकाता विश्वविद्यालय उनका निलंबन खत्म कर देगा. ऐसा ही हुआ भी. खैर किसी तरह से उन्हें स्कॉटिश चर्च कॉलेज में एडमिशन मिला. उन्हीं दिनों वो कालेज की इंडिया डिफेंस फोर्स विश्वविद्यालय यूनिट में शामिल हो गए। इसमें रहकर उन्होंने मेहनत और अनुशासन का पाठ सीखा।

यहीं उन्होंने युद्ध के तौर तरीके सीखे. गौरिल्ला युद्ध से परिचित हुए. बंदूक चलाने का प्रशिक्षण लिया। इस ट्रेनिंग ने उनके आत्मविश्वास और शक्तिशाली होने के अहसास को बढ़ाया. कॉलेज में जहां तीन साल वह पूरी तरह सैन्य प्रशिक्षण से जुड़े रहे तो चौथे साल आकर अपनी पढाई पर ध्यान देना शुरू किया। 1918 में उन्होंने बीए फर्स्ट क्लास से पास किया. मेरिट लिस्ट में दूसरे नंबर पर रहे।

सुभाष के पिता और बडे भाई को अंदाज था कि सुभाष को आईसीएस की परीक्षा पास करने में कोई दिक्कत नहीं होगी. उन्होंने इसके लिए उन्हें इंग्लैंड भेजने का फैसला किया. सुभाष नहीं जाना चाहते थे। वह नहीं चाहते थे कि अंग्रेज सरकार के तहत कोई पद स्वीकार करें. फिर ये सोचकर इंग्लैंड गए कि अगर सेलेक्ट हो भी गए तो उनके पास सोचने का काफी समय होगा कि क्या करना चाहिए।

बाद में उन्होंने आईसीएस में सेलेक्ट होने के बाद ये नौकरी करने से जब मना कर दिया तो सनसनी फैल गई, क्योंकि आईसीएस बहुत बड़ा ओहदा हुआ करता था, कोई इसे सेलेक्ट होने के बाद छोड़ देगा। ये अंग्रेज सोच भी नहीं सकते थे।

समर्पित कर्मचारी भैया रामप्रसाद की विदाई

सरस्वती शिशु मन्दिर निराला नगर, लखनऊ के सेवा निवृत कर्मचारी भैया रामप्रसाद का सम्मान व

विदाई आज दिनांक 14.12.2024 को विद्यालय में किया गया। भैया रामप्रसाद वर्ष 1967 में इस विद्यालय में कर्मचारी पद पर नियुक्त हुए थे। विद्यालय में बस परिचालक, कर्मचारी, उद्यान व चौकीदार, मन्दिर सेवा का कार्य बढ़ी ही जिम्मेदारी से ईमानदारीपूर्वक सेवा भाव से लगातार 57 वर्ष किया।

पारिवारिक परिस्थितियों के कारण कार्य से स्वैच्छिक निवृति लेकर अब अपने गाँव जो रूदौली के पास है वहाँ रहेगें। उनकी सेवा को देखते हुए प्रबन्ध समिति व विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रामतीर्थ वर्मा जी ने रूपये 21000 की धनराशि अंगवस्त्र व अन्य प्रकार से सम्मानित कर विदा किया। इस अवसर पर आचार्य/आचार्या कर्मचारी बन्धु भगिनी सभी भावुक हो गये। रामप्रसाद भैया को विद्याभारती, विद्यालय अधिकारी सभी की अच्छी समझ रही है। तदनुसार उनका कार्य व व्यवहार प्रेरणा स्रोत रहा है। बड़े लोगों से सीख का प्रभाव उनके व्यवहार में आज भी दिखायी देता है।

मानक परिषद अवलोकन

दिनांक 09 दिसम्बर, 2024 को स0ध0 सरस्वती विद्या मन्दिर बालिका इण्टर कालेज लखीनपुर खीरी में विद्या भारती की योजना के अनुसार दिनांक 6, 7, 8 व 9 दिसम्बर, 2024 चार दिवसीय मानक परिषद निरीक्षण सम्पन्न हुआ है। अवलोकन के लिए प्रान्त सम्पर्क प्रमुख श्री राजकुमार तिवारी, सरस्वती बालिका विद्या मंदिर लखनऊ की प्रधानाचार्य श्रीमती सुधा तिवारी एवं सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज, ऊँचाहार के प्रधानाचार्य श्री बालकृष्ण जी का अवलोकन टोली के रूप में विद्यालय में आगमन हुआ। अवलोकन टोली का स्वागत रोली वन्दन से हुआ।

वन्दना वेला में प्रधानाचार्य श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी ने आए हुए सभी आगन्तुकों का परिचय कराया एवं अंग वस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर उनका सम्मान किया।

अवलोकन के अन्तर्गत अवलोकन कर्ताओं ने छात्रा बहनों द्वारा मिशन शक्ति के अन्तर्गत कराटे प्रशिक्षण का अवलोकन, घोष की बहनों द्वारा घोष का प्रदर्शन, स्काउट गाइड की बहनों द्वारा बनाए गए कैम्प का निरीक्षण किया।

अवलोकन कर्ताओं ने विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि का बारीकी से अवलोकन किया। उन्होंने क्रमवार प्रत्येक कक्षा में जाकर शिक्षण कार्य देखा, छात्रा बहनों से प्रश्न किए एवं उनकी उत्तर पुस्तिकाओं को देखा। छात्राओं की उपस्थिति व पाठ्यक्रम की पूर्णता के विषय में जानकारी ली।

इसी क्रम में छात्रा संसद की बहनों की बैठक का आयोजन किया गया इसके उपरान्त आचार्य व आचार्या बैठक आयोजित की गई। निरीक्षण के क्रम में पूर्वछात्रा परिषद बैठक, विद्वत परिषद बैठक, मातृभारती बैठक एवं प्रबन्ध समिति की बैठक का आयोजन किया गया तथा कार्यालय में कार्यालय अभिलेखों का गहनता से निरीक्षण किया।

प्रबन्ध समिति के प्रबन्धक ने आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन

विद्यालय में आचाय/आचार्या एवं अभिभावक के बौद्धिक, आध्यात्मिक, धार्मिक विकास हेतु विद्या भारती कुरूक्षेत्र द्वारा प्रत्येक वर्ष संस्कृति ज्ञान परीक्षा आयोजित की जाती है।

इसी क्रम में आज दिनाँक 14.12.2024, दिन शनिवार को हमारी सनातन संस्कृति की गौरवपूर्ण गाथा को जानने–समझने एवं आत्मसात करने के उद्देश्य से संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन किया गया। परीक्षा में कुल 110 अभिभावक एवं आचार्य आचार्याएँ सम्मिलित हुए।

प्रान्तीय चिन्तन बैठक हुआ सम्पन्न

विद्या भारती योजना के अंतर्गत होने वाले प्रान्तीय चिन्तन बैठकका शुभारम्भ दिनांक 11.12.2024 से प्रारम्भ होकर दिनांक 13.12.2024 को ज्वाला देवी स0 वि0 म0 इण्टर कालेज प्रयागराज में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विद्या भारती पूर्वी उ०प्र० के क्षेत्रीय संगठन मंत्री मा० हेमचंद जी, श्रीमान अनुग्रह नारायण मिश्र जी (मंत्री जन शिक्षा समिति, काशी प्रान्त) एवं विद्या भारती पूर्वी उ०प्र० के क्षेत्रीय सह–संगठन मंत्री डॉ० राम मनोहर जी, श्रीमान शेषधर द्विवेदी जी (प्रदेश निरीक्षक भारतीय शिक्षा समिति काशी प्रांत), व विद्यालय प्रधानाचार्य युगल किशोर मिश्र जी ने माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पार्चन व दीपार्चन किया। तत्पश्चात उपस्थित अधिकारियों के दिशा निर्देशन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप विद्यालय व प्रान्त स्तर पर करणीय कार्य हेतु विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा की गई।

1. विद्या भारती का लक्ष्य
2. विद्यालय गुणवत्ता विकास
3. आवासीय विद्यालय
4. शिशु वाटिका एवं फाउंडेशनल स्तर
5. छात्र/छात्रा
6. आचार्य एवं प्रधानाचार्य
7. मातृभाषा
8. पूर्व छात्र
9. प्रबन्ध समिति
10. सामाजिक दायित्वबोध
11. चुनौतीपूर्ण क्षेत्र की शिक्षा।
12. शिक्षा क्षेत्र की वर्तमान चुनौतियाँ तथा विद्या भारती की भूमिका
13. सरकारी शिक्षा तंत्र तथा अन्य शैक्षिक संस्थानों से सम्पर्क

सभी प्रधानाचार्यों एवं प्रान्तीय अधिकारियों द्वारा उपरोक्त बिन्दुओं को 2027 तक पूर्ण करने का लक्ष्य लिया गया। इस अवसर पर श्रीमान चिंतामणि सिंह, राज बहादुर दीक्षित, विजय उपाध्याय, डॉ. रघुराज सिंह, श्री शरद गुप्त, जगदीश सिंह, सुमंत पाण्डेय, गोपाल तिवारी, गिरिवर शंकर तिवारी, जनशिक्षा समिति के मंत्रीगण एवं काशी प्रान्त के सभी विद्यालयों के 45 प्रधानाचार्य उपस्थित रहे।

कमला देवी बाजोरिया सरस्वती शिशु मन्दिर
एवं
स्टार पेपर मिल्स सरस्वती विद्या मन्दिर

ज्ञानकुंज, विवेकानन्द नगर, सुलतानपुर

हमारा वैशिष्ट्य

- शिशु वाटिका से इण्टरमीडिएट तक शिक्षण।
- भारतीय संस्कृति पर आधारित संस्कारयुक्त आधुनिकतम शिक्षा ।
- प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा बाल केन्द्रित क्रिया आधारित शिक्षण ।
- तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा पर बल।
- विद्युत, वाहन एवं जल की निर्बाध व्यवस्था।
- खेलकूद के लिए विशाल क्रीडांगण की सुविधा ।
- मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान व विशिष्ट छात्रवृत्ति की व्यवस्था।
- गति अवरुद्ध एवं मेधावी छात्रों के शिक्षण की अतिरिक्त व्यवस्था।
- छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु आचार्य अभिभावक सम्पर्क, गोष्ठी।
- भौतिक, रसायन एवं जीव विज्ञान की व्यवस्थित प्रयोगशालाएँ।
- पुस्तकालय, वाचनालय / कम्प्यूटर लैब की उचित व्यवस्था।
- सरकार द्वारा अनुमोदित एवं सहायता प्राप्त अटल टिंकरिंग लैब (A-T-L) की सुविधा।
- एन.सी.सी./एन.एस.एस./स्काउट की सुविधा।
- विगत वर्षों से शिक्षा विभाग द्वारा (A) श्रेणी में वर्गीकृत।
- प्रोजेक्टर, जनरेटर, सी.सी.टी.वी. कैमरा, खेलकूद सामग्री तथा वैज्ञानिक उपकरणों से परिपूर्ण।

विनोद माहेश्वरी	राजेश जैन	अरविन्द अग्रवाल	चन्द्र किशोर राजपूत
अध्यक्ष	प्रबन्धक	कोषाध्यक्ष	प्रधानाचार्य

कमला देवी बाजोरिया सरस्वती शिशु मन्दिर
एवं
स्टार पेपर मिल्स सरस्वती विद्या मन्दिर

ज्ञानकुंज, विवेकानन्द नगर, सुलतानपुर

हमारा वैशिष्ट्य

- शिशु वाटिका से इण्टरमीडिएट तक शिक्षण।
- भारतीय संस्कृति पर आधारित संस्कार युक्त आधुनिकतम शिक्षा।
- प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा बाल केन्द्रित क्रिया आधारित शिक्षण।
- तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा पर बल।
- विद्युत, वाहन एवं जल की निर्बाध व्यवस्था।
- खेलकूद के लिए विशाल क्रीड़ांगण की सुविधा।
- मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान व विशिष्टछात्रवृत्ति की व्यवस्था।
- गति अवरूद्ध एवं मेधावी छात्रों के शिक्षण की अतिरिक्त व्यवस्था।
- छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु आचार्य अभिभावक सम्पर्क, गोष्ठी।
- भौतिक, रसायन एवं जीव विज्ञान की व्यवस्थित प्रयोगशालाएँ।
- पुस्तकालय, वाचनालय / कम्प्यूटर लैब की उचित व्यवस्था।
- सरकार द्वारा अनुमोदित एवं सहायता प्राप्त अटल टिंकरिंग लैब (A-T-L) की सुविधा।
- एन.सी.सी./एन.एस.एस./स्काउट की सुविधा।
- विगत वर्षों से शिक्षा विभाग द्वारा (A) श्रेणी में वर्गीकृत।
- प्रोजेक्टर, जनरेटर, सी.सी.टी.वी. कैमरा, खेलकूद सामग्री तथा वैज्ञानिक उपकरणों से परिपूर्ण।

विनोद माहेश्वरी	राजेश जैन	अरविन्द अग्रवाल	चन्द्र किशोर राजपूत
अध्यक्ष	प्रबन्धक	कोषाध्यक्ष	प्रधानाचार्य

उ0प्र0 सरकार से सम्बद्ध

भारतीय शिक्षा समिति उ0प्र0 द्वारा संचालित

सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज

गोपीनाथपुरम् शुक्लागंज, उन्नाव

दूरभाष नं. - 9956425234

शिशु मन्दिर विशेषांक पर हमारी

हार्दिक शुभकामनायें

सुशील कुमार श्रीवास्तव	राकेश कुमार	भूपेन्द्र सिंह	श्रवण कुमार सिंह
अध्यक्ष	प्रबंधक	कोषाध्यक्ष	प्रधानाचार्या

समाज सेवा में विगत अड़तीस वर्षों से तत्पर जनपद गौरव गोपाल सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रायबरेली सभी देशवासियों का अभिनन्दन करता है।

गोपाल सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय

रायबरेली-229001

Email : gopal-svm-rbl-@gmail-com ;
Website : www-gopalsvm-org

दूरभाष–0535–2217250 ;
मो0 9415117161

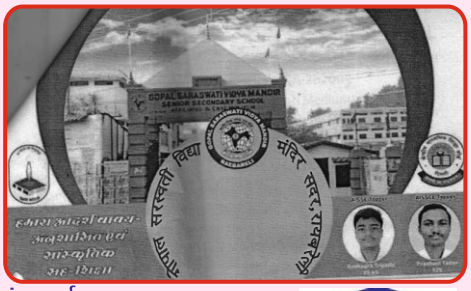

हमारी विशेषताएँ :

- ☆ सी०बी०एस०ई० बोर्ड से विद्यालय संचालित।
- ☆ बोर्ड परीक्षाओं में शानदार परिणाम। विशाल कीडा प्रांगण।
- ☆ विभिन्न पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय।
- ☆ संस्कारक्षम वातावरण में विद्यार्थियों के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण।
- ☆ भव्य भवन, आधुनिक सुसज्जित विज्ञान एवं कम्प्यूटर प्रयोगशाला एवं स्मार्ट क्लास।
- ☆ एन०सी०सी० स्काउट/गाइड की उत्तम व्यवस्था/राज्यपाल एवार्ड से सम्मानित स्काउट छात्र।
- ☆ शासन द्वारा विद्यालय को एश्रेणी प्रमाण पत्र।
- ☆ प्रशासनिक सेवाओ में छात्रों का चयन।
- ☆ व्यवस्थित छात्रावास।

GOPAL SARASWATI VIDYA MANDIR
RAEBARELI

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

जनपद बिजनौर का सर्वोत्तम विद्यालय

रा० रा० सरस्वती विद्या मन्दिर
इण्टर कॉलेज, धामपुर

प्रवेश प्रारम्भ (ADMISSION OPEN)

कक्षा 6 से 12 तक – विज्ञान एवं कॉमर्स वर्ग

- उ० प्र० सरकार द्वारा 'A' ग्रेड प्रदत्त
- प्रकृति की गोद में स्थित
- विशाल खेल का मैदान (क्रीडांगन)
- आधुनिक खेलों की सुविधा
- उन्नत कम्प्यूटर शिक्षा
- व्यक्तित्व विकास (Personaliy Development)
- प्रशिक्षित व अनुभवी शिक्षकों द्वारा शिक्षण
- भारतीय संस्कृति पर आधारित संस्कार युक्त शिक्षा पद्धति
- अंग्रेजी बोलने के लिए विशेष प्रशिक्षण
- प्रोजेक्टर द्वारा शिक्षण
- बोर्ड परीक्षा में सभी छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण
- निःशुल्क अतिरिक्त शिक्षण कक्षाएं संचालित

ENGLISH MEDIUM

Sagar Offset, DPR
9897359648, 7500051540

धर्मपाल सिंह
अध्यक्ष

ब्रजमोहन गुप्ता
व्यवस्थापक

ऋषिपाल सिंह
प्रधानाचार्य

सम्पर्क सूत्र :–
9461648293

नगीना मार्ग, धामपुर (बिजनौर)

dpr.rrsvm@gmail.com
www.rrsvm.com

UPHIN-11403

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026
प्रेषण डाकघर-रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि- 5,6,7,8

विविध गतिविधियाँ

मुद्रक: प्रिन्टको प्रिन्टर्स-22, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ- 226020, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।

प्रकाशन तिथि : 01:01:2025